हरिभूमि
रेवाड़ी भूमि
रोहतक, रविवार 5 जुलाई 2026

तापमान

अधिकतम 35 .5 डिग्री
न्यूनतम 27 .0 डिग्री

11 लंबित मांगों को लेकर स्वास्थ्य मंत्री के आवास का घेराव आज, आंदोलन को तेज करने की चेतावनी

12 चौथे दिन वार्डों में पहुंची कचरा कलेक्शन गाड़ियों, अब कर्मचारियों को महीने की 10 तारीख तक मिलेगा वेतन

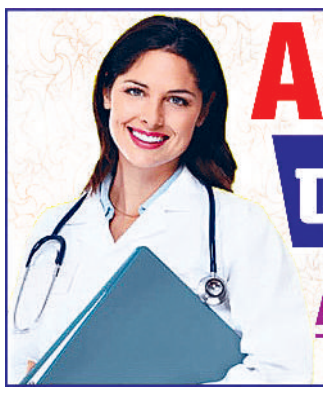
AIT KANINA PHARMACY COLLEGE
Approved by : AICTE & PCI, New Delhi
पॉलिटेक्निक करें नौकरी पाएं
B.PHARM (4 YEARS) D.PHARM (2 YEARS)
2 YEARS COURSE
ADMISSION OPEN
Eligibility : 10+2 Pass (Medical & Non-Medical)
सीटें सीमित
For Session 2026-27
पता : AIT Pharmacy College गाहड़ा रोड, कनीना Mob. : 9992696300, 9466464921

खबर संक्षेप

हथियार सप्लाई का आरोपी चढ़ा हत्थे

रेवाड़ी। थाना बावल पुलिस ने हथियार सप्लाई करने के मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने गत 10 अप्रैल को देशी कट्टे के साथ एक आरोपी को गिरफ्तार किया था। उसके खिलाफ आर्म्स एक्ट के तहत केस दर्ज किया गया था। पूछताछ के दौरान उसने बताया था कि उसे देशी कट्टा आसलवास निवासी बीरसिंह ने उपलब्ध कराया था। बीरसिंह उसके बाद से ही फरार चल रहा था। पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया। कोर्ट में पेश करने के बाद उसे न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।

सड़क हादसों के आरोपी चालक गिरफ्तार

रेवाड़ी। पुलिस ने सड़क हादसों के बाद फरार दो वाहन चालकों को गिरफ्तार किया है। बावल थाना पुलिस ने नेशनल हाइवे पर सड़क हादसे के बाद गत 26 जून को केस दर्ज किया था। हादसे में एक व्यक्ति की मौत हो गई थी। इस मामले में जांच के बाद पुलिस ने महेंद्रगढ़ धनवास निवासी राजेश को गिरफ्तार कर लिया। थाना धारूहेड़ा पुलिस ने सड़क दुर्घटना के बाद 26 जून को दर्ज किए गए मामले में राजस्थान के रासरानिया की ढाणी निवासी प्रदीप को गिरफ्तार किया है। बाद बाद दोनों आरोपियों को पुलिस बेल पर रिहा कर दिया गया।

मारपीट मामलों में दो आरोपी दबोचे

रेवाड़ी। पुलिस ने मारपीट करने और धमकी देने के मामलों में दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। रोहड़ाई थाना पुलिस ने स्वीमिंग पूल के बाहर दो लोगों से मारपीट करने और धमकी देने के मामले में रोहड़ाई निवासी सतपाल को गिरफ्तार किया है। इस मारपीट में नवीन नाम का युवक गंभीर रूप से घायल हो गया था। पुलिस ने सतपाल व उसके साथियों के खिलाफ केस दर्ज किया था। एक अन्य मामले में रामपुरा थाना पुलिस ने 17 मई को दर्ज मामले में राजगढ़ निवासी कपिल को गिरफ्तार कर लिया। दोनों को पुलिस बेल पर छोड़ दिया गया।

पुलिस ने दबोचा कोर्ट से घोषित पीओ

रेवाड़ी। थाना मॉडल टाउन पुलिस ने कोर्ट से घोषित किए गए एक पीओ को गिरफ्तार किया है। अदालत में चल रहे मामले में महेंद्रगढ़ के ककराला निवासी राकेश लगातार अनुपस्थित चल रहा था। उसे बार-बार नोटिस दिए जाने के बाद भी जब वह कोर्ट में पेश नहीं हुआ, तो उसे पीओ घोषित कर दिया गया। उसके खिलाफ केस दर्ज करने के आदेश जारी किए गए थे, जिनकी अनुपालना करते हुए पुलिस ने केस दर्ज करने के बाद आरोपी को गिरफ्तार कर लिया।

चोरी की आरोपी महिला जांच में शामिल

रेवाड़ी। थाना रामपुरा पुलिस ने चोरी के मामले में आरोपी एक महिला को जांच में शामिल किया है। पुलिस ने एक महिला की शिकायत पर 27 मार्च को चोरी का केस दर्ज किया था। केस दर्ज होने के बाद महिला ने अग्रिम जमानत के प्रयास शुरू कर दिए थे। महिला ने अपनी मिलने वाली महिला पर सामान चोरी का आरोप लगाया था। केस दर्ज होने के बाद आरोपी राजरूप देवी ने कोर्ट में अग्रिम जमानत के लिए याचिका दायर की थी।

चौदह सेंटरों पर 3765 अभ्यर्थियों ने दिया लेवल थ्री पीजीटी एचटेट, 690 रहे अनुपस्थित

कड़ी सुरक्षा के बीच लेवल थ्री एचटेट संपन्न, आज दो सत्रों में होगा एग्जाम

सुबह के सत्र में 7287 व शाम के सत्र में 2540 अभ्यर्थी देंगे एचटेट

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

जिले में शनिवार को हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड भिवानी की ओर से हरियाणा अध्यापक पात्रता परीक्षा (एचटेट) का आयोजन किया गया। दो दिन चलने वाली परीक्षा के लिए प्रशासन की ओर से 23 परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं, जिन पर 14282 अभ्यर्थी परीक्षा देंगे। शनिवार को 14 परीक्षा केंद्रों पर शाम की शिफ्ट में लेवल-3 पीजीटी की परीक्षा हुई, जिसमें 4455 अभ्यर्थियों में से 3765 ने एचटेट की परीक्षा दी, जबकि 690 अभ्यर्थी अनुपस्थित थे। जैमर व सीसीटीवी कैमरों की निगरानी के साथ कड़ी सुरक्षा के बीच परीक्षा संपन्न हुई। परीक्षा केंद्रों में प्रवेश से पहले अभ्यर्थियों को कड़ी जांच से गुजरना पड़ा तथा एंट्री गेट पर ही कागजातों की जांच के साथ मेटल डिटेक्टर से जांच व बायोमैट्रिक हाजरी व विडियोग्राफी के बाद अभ्यर्थियों को परीक्षा केंद्रों में एंट्री दी गई। परीक्षा केंद्र में महिला अभ्यर्थियों के नाक, कान व हाथ में पहने आभूषणों को परीक्षा केंद्र के बाहर ही निकलवाया गया। वॉलेंटियर्स की ओर से महिला व पुरुष अभ्यर्थियों के जूते खुलवाकर व कपड़ों की अच्छी तरह से तलाशी ली गई। महिलाओं के हाथों पर बंधे डोरे चूड़ियां भी खुलवाई गई। महिलाओं के हेयर बैंड निकलवाकर बाल खुले कराए गए। परीक्षा केंद्र में पैन तक ले जाने की अनुमति नहीं दी गई। रंगीन प्रवेश पत्र वाले अभ्यर्थियों को ही केंद्र में जाने की अनुमति दोपहर 12:30 बजे शुरू हुई एंट्री दो बजे बंद कर दी गई। परीक्षा के निष्पक्ष, पारदर्शी एवं सफल संचालन के लिए डीसी अभिषेक मीणा व एसपी हेमेंद्र मीणा ने परीक्षा केंद्रों का निरीक्षण किया। इसके अलावा हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के उड़न दस्तों ने भी परीक्षा केंद्रों का दौरा किया।

रेवाड़ी। केएलपी कॉलेज के परीक्षा केंद्र से पेपर देकर निकलते अभ्यर्थी। फोटो : हरिभूमि

रेवाड़ी। आरडीएस गर्ल्स कॉलेज के परीक्षा केंद्र में अभ्यर्थी की जांच करती पुलिसकर्मी।

यहां बनाए गए परीक्षा केंद्र

जिले में एचटेट के लिए सनग्लो इंटरनेशनल स्कूल में बी-1 व बी-2, यदुवंशी शिक्षा निकेतन पटौदी रोड में बी-1 व बी-2, सूरज स्कूल दिल्ली रोड में बी-1 व बी-2, केएलपी कॉलेज में बी-1 व बी-2, अहीर कॉलेज, एमआरके इंस्टीट्यूट, एमआरके कॉलेज सहारनवास, आरडीएस पब्लिक गर्ल्स कॉलेज, डीपीएस जोनावास, राजकीय महिला कॉलेज सेक्टर-18, राजकीय पॉलिटेक्निक लिसाना, गुरुकुलम् स्कूल मसानी, होली चाइल्ड स्कूल धारूहेड़ा चुंगी, जैन गर्ल्स स्कूल सरकुलर रोड, विकास इंटरनेशनल रोलियावास, टैगोर पब्लिक जाड़रा, राज इंटरनेशनल कोनसीवास रोड, आरपीएस स्कूल दिल्ली रोड और कैम्ब्रिज स्कूल गढ़ी बोलनी रोड पर परीक्षा केंद्र बनाए गए।

बैग रखने की व्यवस्था नहीं

एचटेट देने आए अभ्यर्थियों को वाहन पार्किंग करने व अपना बैग रखने के लिए काफी परेशानी उठानी पड़ी। पुलिस कर्मियों से वाहन खड़ा करने व बैग रखने की पूछने पर संतुष्टि भरा जवाब नहीं मिला, जिसके बाद वे काफी देर तक इधर-उधर भटकते रहे और अपने स्तर पर ही व्यवस्था की। काफी अभ्यर्थी तो अपना सामान बाहर ही रखकर केंद्र में चले गए। परीक्षा में ड्यूटी देने वाले कई शिक्षकों को भी एंट्री करने में परेशानी उठानी पड़ी। पुलिस कर्मियों की ओर से लेट आने की कहकर शिक्षकों को बाहर ही रोक दिया गया, हालांकि विनती करने के बाद उनको परीक्षा केंद्र में एंट्री दे दी गई।

आज लेवल एक व दो की होगी परीक्षा

शनिवार को लेवल-3 पीजीटी एचटेट परीक्षा शाम के सत्र में 3 बजे से 5:30 बजे तक आयोजित की गई। रविवार 5 जुलाई को सुबह के सत्र में 23 परीक्षा केंद्रों पर टीजीटी की परीक्षा में 7 हजार 287 और शाम के सत्र में 8 परीक्षा केंद्रों पर पीआरटी की परीक्षा में 2 हजार 540 अभ्यार्थी शामिल होंगे। लेवल-2 टीजीटी की परीक्षा प्रातः 10 बजे से 12:30 बजे तक तथा शाम को 3 बजे से 5:30 बजे तक लेवल-1 पीआरटी की परीक्षा संचालित होगी।

इन पर रही अनुमति और पाबंदी

परीक्षा के दौरान महिला अभ्यर्थियों को मंगलसूत्र पहनने, बिंदी व सिंदूर लगाने तथा सिख अभ्यर्थियों को धार्मिक आस्था के चिन्ह ले जाने की अनुमति रही। अंगूठी, चैन, बालियां, हार, लटकन व ब्रोच जैसे सभी गहने, किसी भी धातु की वस्तु, कोई इलेक्ट्रॉनिक उपकरण जैसे मोबाइल फोन, पेजर, ब्लूटुथ, ईयरफोन, कैलकुलेटर, घड़ी, पर्स, लॉग टेबल, हेल्थ बैंड, प्लास्टिक पाउच, कोरा या मुद्रित कागज एवं लिखित चिट लेकर जाने की अनुमति नहीं रही।

पोक्सो अधिनियम के प्रति किया जागरूक

रेवाड़ी। विद्यार्थियों को जानकारी देते हुए सीजेएम डा. रेनु सोलखे। फोटो : हरिभूमि

■ बच्चों की सुरक्षा केवल परिवार या विद्यालय ही नहीं, बल्कि पूरे समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की ओर से शनिवार को राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय हांसाका में बाल लैंगिक अपराधों से संरक्षण अधिनियम 2012 विषय पर विधिक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस मौके पर डा. रेनू सोलखे ने विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को पोक्सो अधिनियम के उद्देश्य, बच्चों के कानूनी अधिकारों, गुड टच एवं बैड टच, साइबर सुरक्षा, बाल यौन शोषण की रोकथाम तथा किसी भी प्रकार की अप्रिय घटना होने पर शिकायत दर्ज कराने की प्रक्रिया एवं उपलब्ध निःशुल्क विधिक सहायता के बारे में जानकारी दी। विद्यार्थियों को किसी भी अनुचित व्यवहार या घटना को छिपाने के बजाय अपने माता-पिता, शिक्षकों अथवा अन्य विश्वसनीय व्यक्तियों को तत्काल अवगत कराने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर हरीश शर्मा चीफ लीगल एड डिफेंस काउंसिल तथा यशपाल शर्मा डिप्टी चीफ लीगल एड डिफेंस काउंसिल ने भी विद्यार्थियों को पोक्सो अधिनियम के प्रमुख प्रावधानों, बाल अधिकारों, बच्चों की सुरक्षा, कानूनी संरक्षण तथा अपराध की स्थिति में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की ओर से उपलब्ध कराई जाने वाली निःशुल्क विधिक सहायता के जागरूक किया। बच्चों की सुरक्षा केवल परिवार या विद्यालय ही नहीं, बल्कि पूरे समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है तथा समय पर जागरूकता ही ऐसे अपराधों की प्रभावी रोकथाम का सबसे सशक्त माध्यम है। इस अवसर पर विद्यालय के प्रधानाचार्य सतीश कुमार सोनी सहित सभी स्टाफ सदस्य उपस्थित थे।

जड़थल रोड पर खेत में मिलीं दो मृत गायें

» *धारूहेड़ा थाना पुलिस मौके पर पहुंची और घटनास्थल का निरीक्षण किया*

हरिभूमि न्यूज ▶▶| धारूहेड़ा

नंदरामपुर बांस गांव से जड़थल जाने वाले मार्ग पर खेत में दो गायों के मृत अवस्था में मिलने से क्षेत्र में सनसनी फैल गई। शनिवार सुबह किसानों की ओर से खेत में दोनों गायों के शव देखे जाने के बाद सूचना तेजी से पूरे गांव में फैल गई। ग्रामीणों के अनुसार आशंका जताई जा रही है कि अज्ञात पशु तस्कर रात के समय गायों को किसी वाहन में ले जा रहे थे और किसी कारणवश उन्हें सुनसान स्थान पर छोड़कर फरार हो गए। हालांकि, इसकी आधिकारिक पुष्टि पुलिस जांच के बाद ही हो सकेगी। गांव निवासी सुरेश उर्फ शिवली यादव ने गांव के सरपंच तथा पुलिस का डायल 112 पर सूचना दी। सूचना मिलते ही धारूहेड़ा थाना पुलिस मौके पर पहुंची और घटनास्थल का निरीक्षण किया। पुलिस ने अज्ञात के खिलाफ पशु क्रूरता अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। बाद में ग्राम पंचायत एवं ग्रामीणों ने जेसीबी मशीन की सहायता से दोनों मृत गायों का विधिवत अंतिम संस्कार किया। ग्रामीणों का कहना है कि क्षेत्र में पशु तस्करी की घटनाओं पर प्रभावी अंकुश लगाने की आवश्यकता है। उन्होंने प्रशासन से मामले की निष्पक्ष जांच कर दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की है। इस अवसर पर अश्वनी कुमार, नेमीचंद प्रजापत, रणधीर पंच व पूर्व सरपंच खूबराम सहित अनेक ग्रामीण उपस्थित थे।

■ पुलिस ने अज्ञात के खिलाफ पशु क्रूरता अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर जांच शुरू की

रेवाड़ी। नंदरामपुर बांस-जड़थल मार्ग पर खेत में मृत अवस्था में पड़ी गाय व मौजूद ग्रामीण। फोटो : हरिभूमि

टैंपो में महिला का मंगलसूत्र उड़ाया, आरोपी महिला को मौके पर ही किया गिरफ्तार

■ तलाशी लेने पर महिला के कब्जे से मंगलसूत्र बरामद

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

टैंपो में डूंगरवास से शहर आ रही एक महिला का गले का मंगलसूत्र चोरी हो गया। पता चलते ही महिला की सास ने टैंपो में बैठी एक अन्य महिला को पकड़ लिया। उसे पुलिस के हवाले कर दिया गया। पुलिस ने मंगलसूत्र बरामद करने के बाद आरोपी महिला के खिलाफ केस दर्ज कर लिया। पुलिस शिकायत में डूंगरवास निवासी नीरज देवी ने बताया कि वह अपनी सास बबली के साथ किसी काम से टैंपो में शहर की ओर आ रही थी। जब टैंपो उत्तम नगर के पास पहुंचा, तो उसमें एक महिला सवार हो गई। जब वह और उसकी सास धारूहेड़ा चुंगी के पास पहुंचे, तो उसके गले से सोने का मंगलसूत्र गायब मिला। उसने तुरंत अपनी सास को बताया। उसकी सास बबली ने उत्तम नगर से बैठी महिला को मौके पर ही पकड़ लिया। सूचना देकर उसे पुलिस के हवाले कर दिया गया। तलाशी लेने पर महिला के कब्जे से मंगलसूत्र बरामद हो गया। महिला की पहचान शिव नगर कॉलोनी निवासी करिश्मा उर्फ डुमडुम के रूप में हुई है। पुलिस ने उसे काबू करने के बाद उसके खिलाफ चोरी का केस दर्ज कर लिया। कोर्ट में पेश करने के बाद उसे न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।

रेवाड़ी। पुलिस गिरफ्त में महिला आरोपी।

मौसम आज से झमाझम बरसात शुरू होने की संभावना, तापमान में गिरावट दिलाएगी गर्मी से राहत

बादलों के बीच बढ़ा उमस का प्रकोप, गर्मी ने छुड़ाए पसीने

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

मानसून का आगाज होने के बाद एक दिन पहले हुए औसत 3 एमएम बारिश ने उमस बढ़ाने का काम कर दिया है। दिन भर उमस भरी गर्मी ने लोगों को जमकर परेशान किया। बादल छाए रहने के बाद भी गर्मी का असर कम नहीं हुआ।

शाम को बादल गहराने के बाद बूंदाबांदी की संभावना नजर आने लगी। रविवार से मानसून की बारिश शुरू होने की उम्मीद है, जो कुछ दिनों तक रुक-रुककर चलती रह सकती है। शनिवार को सुबह से ही आसमान में आंशिक बादल छाए रहे। बीच-बीच में धूप भी निकलती रही। हवा में नमी का स्तर 60 प्रतिशत तक रहने के कारण वातावरण में भारी उमस बन गई, जिससे लोगों को दिन भर पसीना-पसीना होना पड़ा। चिपचिपाहट भरी गर्मी ने जमकर परेशान किया। अधिकतम तापमान 0.5 डिग्री सेल्सियस बढ़कर 35.5 डिग्री सेल्सियस पर आ गया। न्यूनतम तापमान भी 0.6 डिग्री की वृद्धि के साथ 27.0 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। इस समय तापमान सामान्य से कम बना हुआ है।

रेवाड़ी। एक खेत में खड़ी बाजरे की फसल। फोटो : हरिभूमि

खेतों में छाने लगी हरियाली

जून माह में रुक-रुककर हुई बारिश के बाद किसानों ने कपास और बाजरे की बिजाई शुरू कर दी थी। अगेती बिजाई करने वाले किसानों के खेतों में बाजरे की फसल हरियाली दे रही है। खेतों में रबी फसल कटाई के बाद एक बार फिर से हरियाली छाने लगी है। आधे से अधिक किसान बाजरे की बिजाई के लिए अभी भी बारिश का इंतजार कर रहे हैं। अच्छी बारिश के बाद ही बिजाई की जा सकेगी। इस समय होने वाली बूंदाबांदी या हल्की बारिश भी फसलों को फायदा पहुंचा रही है।

वातावरण में चिपचिपाहट बनी

बीते शुक्रवार की रात जिले में औसत 3.0 एमएम तक बारिश होने के कारण वातावरण में चिपचिपाहट बनी हुई है। धूप निकलते ही उमस बढ़ जाती है। इसके बाद कूलरों की हवा भी बेअसर साबित होने लगती है। कूलरों की हवा नमी को और ज्यादा बढ़ाने का काम करती है। मौसम विभाग के अनुसार मानसून सक्रिय होना शुरू हो गया है। 5 जून से आसमान में बादल छाने के बाद रुक-रुककर बारिश हो सकती है। बारिश का सिलसिला आने वाले सप्ताह के अंत तक चल सकता है। इस दौरान मध्यम से भारी बारिश तक हो सकती है। बारिश की झड़ी शुरू होने के बाद उमस भरी गर्मी से राहत मिलने की संभावना है।

कोसली क्षेत्र के गांव से युवती लापता

कोसली। क्षेत्र के गांव से एक युवती बिना किसी को कुछ बताए घर से लापता हो गई। युवती के पिता ने कोसली पुलिस को दी शिकायत में बताया कि उनकी 19 वर्षीय लड़की एक जुलाई को घर से बिना बताए चली गई है। उन्होंने अपने स्तर पर उसकी तलाश की लेकिन उसका कोई पता नहीं चल पाया। पुलिस ने पिता की शिकायत पर गुमशुदगी का मामला दर्ज कर लिया है।

SOMANY EDUCATIONAL INSTITUTIONS
25+ YEARS OF EXCELLENCE IN EDUCATION
* Somany Institute of Technology and Management * Somany College of Pharmacy
ADMISSIONS OPEN
COURSES OFFERED
SITM Courses
• B.Tech (CSE, ME, ECE, PT)
• M.Tech (CSE, ME, ECE, PT)
• BBA • BCA • MBA
SCP Courses
• D.Pharma
• B.Pharma
Upto 100% Scholarship
Facilities
• Experienced Faculty
• Modern Infrastructure
• Well Equipped Labs
• Placement Assistance
• Holistic Development
Delhi - Jaipur Highway, NH - 48, Near Rewari City Sector 26
www.somanyncr.in | www.somanycollegeofpharmacy.in
ADMISSION HELPLINE 9541069998 | 01274-261239 | 9034717734 | 7082539268

■ 60 हजार बचाने के चक्कर में गंवा सकते हैं 82 लाख रुपये

■ कंपाउंडिंग बताता है कि निवेश में समय ही सबसे बड़ी पूंजी

■ जल्दी शुरुआत करने वालों को मिलता है सबसे बड़ा फायदा

एसआईपी में सिर्फ 1 वर्ष की देरी पड़ सकती है भारी

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

म्यूचुअल फंड में निवेश करने वाले ज्यादातर लोग यह मानते हैं कि जितना अधिक पैसा निवेश करेंगे, उतना बड़ा फंड तैयार होगा। यह बात सही है, लेकिन पूरी सच्चाई नहीं। निवेश विशेषज्ञों का कहना है कि निवेश की रकम से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण है निवेश की शुरुआत का समय। यदि कोई व्यक्ति एसआईपी शुरू करने में सिर्फ एक साल की भी देरी करता है तो उसे भविष्य में लाखों रुपये का नुकसान उठाना पड़ सकता है। वित्तीय विशेषज्ञों के अनुसार कंपाउंडिंग की ताकत समय के साथ सबसे अधिक काम करती है। यही वजह है कि एसआईपी की पहली किस्त की कीमत आखिरी किस्त से कई गुना ज्यादा होती है। एक साल की देरी केवल 12 किस्तों का नुकसान नहीं कराती, बल्कि उन किस्तों पर मिलने वाले वर्षों के रिटर्न से भी निवेशक वंचित रह जाता है।

क्यों सबसे अहम है पहली एसआई

कंपाउंडिंग का अर्थ है कि निवेश पर मिलने वाला रिटर्न भी आगे चलकर रिटर्न कमाने लगता है। यानी आपका पैसा केवल बढ़ता नहीं, बल्कि बढ़ा हुआ पैसा भी कमाई करता है। यदि कोई निवेशक 30 वर्ष तक लगातार एसआईपी करता है, तो पहले साल जमा की गई रकम को पूरे 30 वर्षों तक बढ़ने का मौका मिलता है। वहीं अंतिम वर्ष में जमा की गई राशि को केवल कुछ महीनों का ही समय मिलता है। यही कारण है कि शुरुआती निवेश की ताकत सबसे अधिक होती है। विशेषज्ञ इसे निवेश की दुनिया का सबसे बड़ा जादू मानते हैं। जितनी जल्दी शुरुआत होगी, कंपाउंडिंग उतना ही अधिक काम करेगी।

एक साल की देरी का बड़ा नुकसान

मान लीजिए कोई निवेशक हर महीने 5,000 रुपये की एसआईपी करता है और उसे औसतन 12 प्रतिशत वार्षिक रिटर्न मिलता है। यदि वह लगातार 30 वर्षों तक निवेश करता है तो कुल निवेश राशि 18 लाख रुपये होगी। इस अवधि के अंत में उसका फंड लगभग 1.76 करोड़ रुपये तक पहुंच सकता है। लेकिन यदि वही निवेशक एसआईपी शुरू करने में सिर्फ एक वर्ष की देरी कर देता है और केवल 29 वर्ष निवेश करता है, तो उसका अंतिम फंड घटकर लगभग 1.56 करोड़ रुपये रह जाएगा। यानी केवल 60 हजार रुपये (12 किस्तें) का निवेश टालने की कीमत लगभग 20.43 लाख रुपये हो सकती है। यह उदाहरण बताता है कि निवेश में सबसे बड़ा नुकसान बाजार की गिरावट नहीं, बल्कि समय गंवाने से होता है।

जितनी बड़ी एसआई, उतना नुकसान

एक साल की देरी का असर निवेश राशि बढ़ने के साथ और भी ज्यादा दिखाई देता है। यदि कोई निवेशक हर महीने 2,000 रुपये की एसआईपी करता है तो एक साल की देरी से लगभग 8.17 लाख रुपये का संभावित नुकसान हो सकता है। 10,000 रुपये मासिक एसआईपी करने वाले निवेशक के लिए यही नुकसान बढ़कर लगभग 40.87 लाख रुपये तक पहुंच सकता है। वहीं यदि मासिक एसआईपी 20,000 रुपये की है तो केवल एक साल की देरी भविष्य में करीब 82 लाख रुपये के संभावित फंड को कम कर सकती है। यही कारण है कि निवेश विशेषज्ञ हमेशा कहते हैं कि ₹सही समय का इंतजार मत कीजिए, समय को अपने पक्ष में कीजिए।

आखिर में रफ्तार पकड़ती है कंपाउंडिंग

एसआईपी का सबसे दिलचस्प पहलू यह है कि शुरुआती वर्षों में निवेश की रफ्तार धीमी लगती है, लेकिन बाद के वर्षों में वही निवेश तेजी से बढ़ने लगता है।

उदाहरण के तौर पर 5,000 रुपये की मासिक एसआईपी में

- 10 वर्ष बाद कुल निवेश लगभग 6 लाख रुपये होगा और फंड करीब 11.62 लाख रुपये बन सकता है।
- 20 वर्ष बाद कुल निवेश 12 लाख रुपये होगा, लेकिन फंड करीब 50 लाख रुपये तक पहुंच सकता है।
- 30 वर्ष पूरे होने पर कुल निवेश 18 लाख रुपये रहेगा, जबकि फंड बढ़कर लगभग 1.76 करोड़ रुपये हो जाएगा।
- यानी अंतिम दस वर्षों में केवल 6 लाख रुपये का अतिरिक्त निवेश पूरे फंड को 50 लाख रुपये से बढ़ाकर 1.76 करोड़ रुपये तक पहुंचा देता है। यही कंपाउंडिंग की असली ताकत है।

शुरुआत में देरी हो गई तो क्या करें?

यदि किसी कारणवश एसआईपी शुरू करने में देरी हो गई है तो भी नुकसान की भरपाई की जा सकती है।

विशेषज्ञों के अनुसार यदि आपने पहला साल गंवा दिया है तो शेष अवधि में अपनी मासिक एसआईपी थोड़ी बढ़ाकर इस अंतर को काफी हद तक पूरा किया जा सकता है। उदाहरण के लिए यदि आपकी योजना 5,000 रुपये मासिक एसआईपी की थी और एक साल की देरी हो गई, तो अगले 29 वर्षों तक लगभग 5,655 रुपये प्रति माह निवेश करके उस संभावित अंतर को काफी हद तक भरा जा सकता है। यानी हर महीने केवल 655 रुपये अतिरिक्त निवेश भविष्य में लाखों रुपये का अंतर पैदा कर सकता है।

छोटी एसआईपी भी बनेगी बड़ा फंड

- कई लोग सोचते हैं कि निवेश शुरू करने के लिए बड़ी रकम होना जरूरी है, जबकि वास्तविकता इससे बिल्कुल अलग है।
- वित्तीय सलाहकारों का कहना है कि यदि फिलहाल बड़ी राशि उपलब्ध नहीं है तो 500 रुपये, 1,000 रुपये या 2,000 रुपये से भी एसआईपी शुरू की जा सकती है। जैसे-जैसे आय बढ़े, वैसे-वैसे एसआईपी की राशि भी बढ़ाई जा सकती है।
- नियमित निवेश और लंबी अवधि का अनुशासन ही बड़ा कोष तैयार करने की सबसे प्रभावी रणनीति है।

समय ही सबसे बड़ा निवेश है

विशेषज्ञों का मानना है कि निवेश की दुनिया में सबसे मूल्यवान चीज पैसा नहीं, बल्कि समय है। बाजार में उतार-चढ़ाव आते रहेंगे, लेकिन लंबे समय तक निवेश बनाए रखने वाले निवेशकों को कंपाउंडिंग का सबसे बड़ा लाभ मिलता है। यदि आप भविष्य में आर्थिक रूप से मजबूत बनना चाहते हैं तो निवेश की शुरुआत टालने के बजाय जितनी जल्दी संभव हो, उतनी जल्दी एसआईपी शुरू करें। छोटी-सी शुरुआत भी समय के साथ करोड़ों रुपये का फंड तैयार कर सकती है। इसलिए निवेश का सबसे अच्छा समय आज है, क्योंकि एक साल की देरी भविष्य में लाखों नहीं, बल्कि बड़े निवेशकों के लिए करोड़ों रुपये तक का अंतर पैदा कर सकती है।

पीपीएफ या म्यूचुअल फंड पर लें लोन?

- इमरजेंसी में कौन सा विकल्प है बेहतर
- अचानक पैसों की जरूरत पड़ने पर निवेश तोड़े बिना मिल सकती रकम
- दोनों विकल्पों के फायदे, नुकसान और किसके लिए कौन बेहतर

बिजनेस डेस्क

अचानक मेडिकल इमरजेंसी, बिजनेस में नकदी की जरूरत या किसी अन्य जरूरी खर्च के लिए अक्सर लोग अपने निवेश तोड़ देते हैं। लेकिन वित्तीय विशेषज्ञों का मानना है कि लंबी अवधि के निवेश को समय से पहले भुनाने के बजाय उसके बदले लोन लेना कई बार अधिक फायदेमंद साबित होता है। पब्लिक प्रोविडेंट फंड (पीपीएफ) और म्यूचुअल फंड, दोनों पर लोन लेने की सुविधा उपलब्ध है, लेकिन दोनों की शर्तें, ब्याज दरें और लोन की सीमा अलग-अलग हैं। ऐसे में जरूरत और निवेश के आधार पर सही विकल्प चुनना जरूरी है।

पीपीएफ पर लोनः कम ब्याज, लेकिन सीमित सुविधा

पीपीएफ पर लोन केवल एक निश्चित अवधि के दौरान ही लिया जा सकता है। खाता खुलने वाले वित्तीय वर्ष के तीसरे साल से लेकर छठे वित्तीय वर्ष तक ही यह सुविधा मिलती है। यदि पहले लिया गया लोन पूरी तरह चुका दिया गया हो, तभी अगला लोन लिया जा सकता है। लोन की अधिकतम राशि आवेदन से दो वित्तीय वर्ष पहले के खाते में उपलब्ध बैलेंस के केवल 25 प्रतिशत तक सीमित होती है। चूंकि पीपीएफ सरकार समर्थित बचत योजना है, इसलिए इस पर ब्याज भी कम लगता है। वर्तमान में पीपीएफ पर 7.1 प्रतिशत ब्याज मिलता है और लोन की ब्याज दर इससे केवल 1 प्रतिशत अधिक यानी लगभग 8.1 प्रतिशत है। उदाहरण के तौर पर यदि किसी निवेशक को चार लाख रुपये का लोन चाहिए तो उसके पीपीएफ खाते में लगभग 16 लाख रुपये का बैलेंस होना आवश्यक होगा, क्योंकि केवल 25 प्रतिशत राशि ही लोन के रूप में मिल सकती है।

म्यूचुअल फंड पर लोन : ज्यादा रकम और अधिक लचीलापन

म्यूचुअल फंड के बदले लोन निवेशकों के लिए अधिक लचीला विकल्प माना जाता है। यह सुविधा फिजिकल और डीमैट दोनों रूपों में रखी गई म्यूचुअल फंड यूनिट्स पर उपलब्ध है। इसका लाभ व्यक्तिगत निवेशकों के अलावा एचयूएफ, कंपनियां, एलएलपी, ट्रस्ट और साझेदारी फर्में भी ले सकती हैं। इक्विटी, डेट, हाइब्रिड और लिक्विड फंड सभी पर लोन मिल सकता है, हालांकि लोन की सीमा फंड के प्रकार पर निर्भर करती है। डेट और लिक्विड फंड पर आमतौर पर 70 से 80 प्रतिशत तक लोन मिल जाता है, जबकि इक्विटी फंड पर यह सीमा लगभग 50 प्रतिशत रहती है। यदि किसी निवेशक को चार लाख रुपये की जरूरत है तो करीब आठ लाख रुपये के म्यूचुअल फंड निवेश के आधार पर यह राशि मिल सकती है। सबसे बड़ा फायदा यह है कि निवेशक की यूनिट्स बिकती नहीं हैं और वे बाजार में निवेशित बनी रहती हैं, जिससे लंबी अवधि में संपत्ति निर्माण जारी रहता है।

ब्याज और जोखिम में बड़ा अंतर

म्यूचुअल फंड पर लोन की ब्याज दर आमतौर पर 9 से 12 प्रतिशत के बीच होती है। कई बैंक और वित्तीय संस्थान इसे ओवरड्राफ्ट सुविधा के रूप में देते हैं, जिसमें केवल इस्तेमाल की गई राशि पर ही ब्याज देना पड़ता है। हालांकि इसमें एक जोखिम भी है। यदि बाजार गिरता है और म्यूचुअल फंड की नेट एसेट वैल्यू (एनएवी) कम हो जाती है, तो बैंक अतिरिक्त सिक्योरिटी या आंशिक भुगतान की मांग कर सकता है। ऐसा नहीं करने पर गिरवी रखी गई यूनिट्स बेची भी जा सकती हैं।

किसके लिए कौन सा विकल्प बेहतर

वेतनभोगी कर्मचारियों के लिए, जो नियमित एसआईपी करते हैं और अच्छा म्यूचुअल फंड पोर्टफोलियो बना चुके हैं, म्यूचुअल फंड पर लोन बेहतर विकल्प माना जाता है। इससे निवेश टूटता नहीं और कंपाउंडिंग का लाभ भी जारी रहता है। स्वरोजगार या व्यवसाय करने वालों के लिए भी म्यूचुअल फंड पर लोन अधिक उपयोगी है, क्योंकि इसमें बड़ी राशि अपेक्षाकृत जल्दी मिल सकती है।

एसआईएफ की बढ़ती लोकप्रियता से लंपसम निवेश को मिल रही है चुनौती

10 लाख की न्यूनतम निवेश सीमा के बावजूद एसआईएफ की ओर बढ़ा रुझान

जानकारी
बिजनेस डेस्क

विशेषज्ञों का कहना है कि पहले लॉन्ग-शॉर्ट निवेश रणनीति का लाभ केवल कैटेगरी-III अल्टरनेटिव इन्वेस्टमेंट फंड (एआईएफ) के माध्यम से ही मिल पाता था। लेकिन एआईएफ में निवेश की न्यूनतम सीमा एक करोड़ रुपये होती है, जो अधिकांश निवेशकों की पहुंच से बाहर है। इसके विपरीत एसआईएफ में केवल 10 लाख रुपये से निवेश संभव है। इससे संपन्न निवेशकों को कम पूंजी में वही निवेश रणनीति अपनाने का अवसर मिल रहा है। यही कारण है कि बड़ी संख्या में एचएनआई निवेशक अब एसआईएफ को अपनाने लगे हैं।

म्यूचुअल फंड उद्योग में लंपसम निवेशकों के लिए एक नया विकल्प तेजी से उभर रहा है। स्पेशलाइज्ड इन्वेस्टमेंट फंड (एसआईएफ) की बढ़ती लोकप्रियता अब पारंपरिक इक्विटी म्यूचुअल फंडों के लंपसम निवेश को चुनौती देती दिखाई दे रही है। बाजार विशेषज्ञों का मानना है कि हाल के महीनों में इक्विटी म्यूचुअल फंडों में लंपसम निवेश घटने के पीछे एसआईएफ की बढ़ती स्वीकार्यता भी एक अहम वजह हो सकती है। पिछले महीने इक्विटी म्यूचुअल फंडों में शुद्ध निवेश (नेट इनफ्लो) में करीब 40 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई, जबकि दूसरी ओर एसआईपी (एसआईपी) निवेश लगातार मजबूत बना रहा। इससे यह संकेत मिला कि छोटे निवेशक नियमित निवेश जारी रखे हुए हैं, जबकि बड़े निवेशक अब नए विकल्पों की तलाश कर रहे हैं।

सात माह में सात गुना बढ़ा एयूएम

पिछले वर्ष शुरू किए गए स्पेशलाइज्ड इन्वेस्टमेंट फंड्स ने बेहद कम समय में निवेशकों का भरोसा जीत लिया है। अक्टूबर 2025 में इनका एसेट अंडर मैनेजमेंट (एयूएम) लगभग 2,010 करोड़ रुपये था, जो मई 2026 तक बढ़कर 13,814 करोड़ रुपये के करीब पहुंच गया। यानी महज सात महीनों में इनका आकार लगभग सात गुना बढ़ गया। हालांकि एसआईएफ में निवेश के लिए न्यूनतम 10 लाख रुपये की सीमा तय की गई है, फिर भी हाई नेटवर्थ इंडिविजुअल (एचएनआई) निवेशकों में इसका आकर्षण लगातार बढ़ रहा है।

हाइब्रिड लॉन्ग-शॉर्ट स्कीम पसंद

एसआईएफ के भीतर सबसे अधिक लोकप्रियता हाइब्रिड लॉन्ग-शॉर्ट स्कीम को मिली है। मई 2026 तक इस श्रेणी में करीब 9,709 करोड़ रुपये का निवेश आया, जो कुल एसआईएफ एसेट्स का लगभग 70 प्रतिशत है। इन योजनाओं में प्रति फोलियो औसत निवेश भी सबसे अधिक रहा। हाइब्रिड लॉन्ग-शॉर्ट स्कीम में औसत निवेश करीब 33.86 लाख रुपये प्रति फोलियो दर्ज किया गया। इसके मुकाबले इक्विटी लॉन्ग-शॉर्ट स्कीम में यह आंकड़ा 15.64 लाख रुपये और इक्विटी एक्स-टॉप-100 लॉन्ग-शॉर्ट स्कीम में 12.77 लाख रुपये रहा। विशेषज्ञों का कहना है कि यह आंकड़ा बताता है कि संपन्न निवेशक इस नई श्रेणी पर तेजी से भरोसा जता रहे हैं।

क्यों बढ़ रही है एसआईएफ मांग

बाजार जानकारों के अनुसार एसआईएफ की सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह निवेशकों को बेहतर जोखिम-समायोजित रिटर्न देने की कोशिश करता है। विशेष रूप से हाइब्रिड लॉन्ग-शॉर्ट रणनीति बाजार में गिरावट के दौरान भी नुकसान को सीमित रखने का प्रयास करती है। हालिया बाजार सुधार के दौरान इन योजनाओं ने सकारात्मक रिटर्न देकर निवेशकों का भरोसा और मजबूत किया है। यही वजह है कि कई निवेशक अब पारंपरिक लंपसम इक्विटी निवेश की जगह एसआईएफ को प्राथमिकता दे रहे हैं।

म्यूचुअल फंडों पर पड़ेगा असर?

विशेषज्ञों का मानना है कि अभी यह कहना जल्दबाजी होगी कि एसआईएफ पारंपरिक म्यूचुअल फंडों का स्थान ले लेंगे। फिलहाल इसका प्रभाव मुख्य रूप से बड़े लंपसम निवेशकों तक सीमित है। एसआईपी निवेश में किसी प्रकार की कमजोरी देखने को नहीं मिली है। इससे स्पष्ट है कि खुदरा निवेशक अभी भी नियमित निवेश के लिए पारंपरिक म्यूचुअल फंडों पर भरोसा बनाए हुए हैं। हालांकि यदि एसआईएफ का प्रदर्शन लगातार बेहतर रहता है तो आने वाले वर्षों में बड़े निवेशकों का एक हिस्सा इस श्रेणी की ओर शिफ्ट हो सकता है।

किन निवेशकों के लिए बेहतर है एसआईएफ

विशेषज्ञों के अनुसार एसआईएफ उन निवेशकों के लिए उपयुक्त हो सकता है जिनके पास पहले से बड़ा निवेश पोर्टफोलियो है और जो बाजार की अस्थिरता के बीच बेहतर जोखिम प्रबंधन चाहते हैं। विशेष रूप से ऐसे निवेशक जो एकमुश्त बड़ी राशि निवेश करते हैं और केवल इक्विटी पर निर्भर नहीं रहना चाहते, उनके लिए यह एक बेहतर विकल्प बन सकता है। इसके अलावा फिक्स्ड इनकम निवेशक, जो सीमित जोखिम के साथ अपेक्षाकृत बेहतर रिटर्न चाहते हैं, वे भी भविष्य में इस श्रेणी की ओर आकर्षित हो सकते हैं।

अभी भी कई चुनौतियां बाकी

हालांकि विशेषज्ञ यह भी मानते हैं कि एसआईएफ को व्यापक स्तर पर लोकप्रिय होने में अभी समय लगेगा। निवेशकों में जागरूकता बढ़ाने, वितरकों को प्रशिक्षित करने और लंबी अवधि का प्रदर्शन रिकॉर्ड तैयार होने के बाद ही यह श्रेणी बड़े पैमाने पर स्वीकार की जाएगी। निवेशकों के लिए यह भी जरूरी होगा कि वे केवल शुरुआती प्रदर्शन देखकर निवेश न करें, बल्कि फंड की रणनीति, जोखिम, शुल्क और अपने वित्तीय लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए निर्णय लें।

लंबी अवधि में बदल सकता है निवेश का परिदृश्य

वित्तीय विशेषज्ञों का मानना है कि भारतीय निवेश उद्योग तेजी से विकसित हो रहा है। जैसे-जैसे निवेशकों की समझ बढ़ेगी, वे पारंपरिक इक्विटी और डेट फंडों से आगे बढ़कर नई निवेश रणनीतियों को भी अपनाएंगे। स्पेशलाइज्ड इन्वेस्टमेंट फंड इसी बदलाव का संकेत हैं। यदि इनका प्रदर्शन स्थिर और बेहतर बना रहता है तो आने वाले वर्षों में यह हाई नेटवर्थ निवेशकों के पोर्टफोलियो का महत्वपूर्ण हिस्सा बन सकते हैं। हालांकि खुदरा निवेशकों के लिए एसआईपी आधारित म्यूचुअल फंड अभी भी सबसे सरल, अनुशासित और प्रभावी निवेश विकल्प बने हुए हैं।

20 साल की एसआईपी में सिर्फ पांच फंड ही बने असली 'वेल्थ क्रिएटर'

बिजनेस डेस्क। म्यूचुअल फंड में निवेश करने वाले अधिकांश निवेशकों का सपना होता है कि उन्हें लंबे समय तक लगातार बेहतर रिटर्न मिले। हालांकि, ऐसा करने वाले फंड बहुत कम हैं। करीब 600 सक्रिय इक्विटी म्यूचुअल फंड्स के विश्लेषण में केवल पांच ऐसी योजनाएं सामने आई हैं, जिन्होंने 3, 5, 10, 15 और 20 वर्ष जैसी सभी प्रमुख निवेश अवधियों में 15 प्रतिशत से अधिक सालाना एसआईपी रिटर्न दिया है। यह विश्लेषण वैल्यू रिसर्च के 29 जून 2026 तक के आंकड़ों पर आधारित है। सबसे खास बात यह है कि इस सूची में कोई भी फ्लेक्सी-कैप या लार्जकैप फंड शामिल नहीं है। दो मिडकैप, दो हेल्थकेयर और एक इंफ्रास्ट्रक्चर थीम आधारित फंड ने निवेशकों को लंबी अवधि में शानदार संपत्ति बनाने का अवसर दिया। यह दर्शाता है कि मजबूत सेक्टरों में लंबे समय तक धैर्य के साथ निवेश करने वाले निवेशकों को बेहतरीन रिटर्न मिला।

ये हैं पांच सबसे सफल एसआईपी फंड

- इस सूची में एचएसबीसी मिडकैप फंड (रेगूलर) पहले स्थान पर है। इस फंड ने 3 वर्ष में 20.05%, 5 वर्ष में 21.46%, 10 वर्ष में 18.39%, 15 वर्ष में 18.96% और 20 वर्ष में 17.70% का वार्षिक एसआईपी रिटर्न दिया। निवेशक ने 20 वर्षों तक हर महीने 10,000 की एसआईपी की होती, तो उसका निवेश बढ़कर 1.86 करोड़ हो जाता।
- दूसरे स्थान पर एसीबीआई हेल्थकेयर ऑपर्च्युनिटी फंड (रेगूलर) रहा। इसने 20 वर्षों में 16.80 प्रतिशत वार्षिक एसआईपी रिटर्न दिया और 10,000 मासिक निवेश को लगभग 1.68 करोड़ रुपये में बदल दिया।
- तीसरे स्थान पर आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल मिडकैप फंड रहा। इस फंड ने 20 वर्षों में 16.52 प्रतिशत का रिटर्न दिया और लगभग 1.61 करोड़ का कोष तैयार किया।
- चौथे स्थान पर यूटीआई हेल्थकेयर म्यूचुअल फंड (रेगूलर) रहा, जिसने 20 वर्षों में 15.61 प्रतिशत रिटर्न देते हुए 10,000 की मासिक एसआईपी को लगभग 1.45 करोड़ रुपये तक पहुंचाया।
- पांचवें स्थान पर डीएसपी इंडिया टीआईजीईआर फंड (रेगूलर) रहा। इंफ्रास्ट्रक्चर थीम पर आधारित इस फंड ने 20 वर्षों में 15.40 प्रतिशत रिटर्न दिया और निवेशकों का कोष करीब 1.40 करोड़ रुपये तक पहुंचा दिया।

अमेरिकी ब्याज दरों, ट्रेजरी यील्ड और वैश्विक अनिश्चितता से बढ़ा दबाव

सात माह के निचले स्तर पर सोना-चांदी, ऐसे में क्या करें निवेशक

बिजनेस डेस्क

जुलाई की शुरुआत सर्राफा बाजार के लिए झटके भरी रही। 1 जुलाई को घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दोनों बाजारों में सोने और चांदी की कीमतों में बड़ी गिरावट दर्ज की गई। अमेरिकी ट्रेजरी यील्ड में तेजी, फेडरल रिजर्व की सख्त मौद्रिक नीति के संकेत और वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं ने निवेशकों की धारणा को प्रभावित किया। इसका असर यह हुआ कि सोना और चांदी दोनों सात महीने के निचले स्तर के करीब पहुंच गए। हालांकि विशेषज्ञों का मानना है कि यह गिरावट केवल नकारात्मक संकेत नहीं है, बल्कि लंबी अवधि के निवेशकों के लिए अवसर भी बन सकती है। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर अगस्त डिलीवरी वाला सोना 1,701 रुपये यानी 1.19 प्रतिशत टूटकर करीब 1.40 लाख रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ। वहीं सितंबर डिलीवरी वाली चांदी में और बड़ी गिरावट देखने को मिली। चांदी 5,380 रुपये यानी 2.35 प्रतिशत लुढ़ककर 2.23 लाख रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर आ गई।

अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी कमजोरी का यही रुख दिखाई दिया। कॉमेक्स पर सोना करीब 4,000 डॉलर प्रति औंस के महत्वपूर्ण स्तर के आसपास सात महीने के निचले स्तर पर कारोबार करता रहा, जबकि चांदी लगभग तीन प्रतिशत गिरकर 57.73 डॉलर प्रति औंस पर पहुंच गई।

अमेरिकी फेड की सख्ती बनी सबसे बड़ी वजह

बाजार विशेषज्ञों के अनुसार इस गिरावट की सबसे बड़ी वजह अमेरिकी केंद्रीय बैंक फेडरल रिजर्व का सख्त रुख है। हाल के दिनों में फेड अधिकारियों ने संकेत दिए हैं कि यदि महंगाई पूरी तरह नियंत्रण में नहीं आती है तो इस वर्ष के अंत तक ब्याज दरों में एक और बढ़ोतरी की जा सकती है। ब्याज दरें बढ़ने से निवेशकों का रुझान सोने जैसी बिना ब्याज वाली परिसंपत्तियों से हटकर बॉन्ड और अन्य ब्याज देने वाले निवेश विकल्पों की ओर बढ़ जाता है। यही कारण है कि सोने और चांदी पर बिकवाली का दबाव लगातार बना हुआ है।

ट्रेजरी यील्ड और मजबूत डॉलर का असर

अमेरिकी सरकारी बॉन्ड यानी ट्रेजरी की यील्ड में तेजी ने भी सोने की चमक फीकी कर दी है। जब ट्रेजरी यील्ड बढ़ती है तो निवेशकों को सुरक्षित और बेहतर रिटर्न वाले विकल्प मिलने लगते हैं। इससे सोने की मांग घटती है। इसके साथ ही डॉलर इंडेक्स में मजबूती आने से भी अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोने और चांदी की कीमतों पर दबाव बढ़ा। चूंकि सोने का कारोबार डॉलर में होता है, इसलिए डॉलर मजबूत होने पर अन्य देशों के निवेशकों के लिए सोना महंगा हो जाता है और मांग कमजोर पड़ जाती है।

मध्य-पूर्व में बढ़ता तनाव भी चिंता का कारण

मध्य-पूर्व में एक बार फिर बढ़ते तनाव ने बाजार की चिंता बढ़ा दी है। ईरान और अमेरिका के बीच रिश्तों में आई तल्खी तथा शांति वार्ता को लेकर अनिश्चितता ने निवेशकों को सतर्क बना दिया है। हालांकि सामान्य परिस्थितियों में ऐसे तनाव के दौरान सोने को सुरक्षित निवेश माना जाता है, लेकिन इस समय ब्याज दरों और डॉलर की मजबूती का प्रभाव अधिक देखने को मिल रहा है। इसके अलावा कच्चे तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव ने भी वैश्विक महंगाई को लेकर नई चिंताएं पैदा कर दी हैं। यदि तेल महंगा होता है तो महंगाई बढ़ सकती है, जिससे केंद्रीय बैंक ब्याज दरें लंबे समय तक ऊंची रख सकते हैं।

विशेषज्ञ बोले- जल्दबाजी नहीं, रणनीति के साथ ही करें निवेश

अब अमेरिकी आंकड़ों पर टिकी नजर

बाजार की अगली दिशा काफी हद तक अमेरिका से आने वाले आर्थिक आंकड़ों पर निर्भर करेगी। निवेशकों की नजर जून के **ADP** रोजगार आंकड़ों और नॉन-फार्म पेरोल डेटा पर है। यदि रोजगार के आंकड़े मजबूत आते हैं तो फेड के लिए ब्याज दरें ऊंची बनाए रखने का आधार मजबूत होगा, जिससे सोने पर दबाव बना रह सकता है। वहीं, यदि आंकड़े उम्मीद से कमजोर आते हैं तो ब्याज दरों में नरमी की उम्मीद बढ़ेगी और सोना-चांदी में रिकवरी देखने को मिल सकती है।

विशेषज्ञों की रायः अभी सतर्कता जरूरी

सर्राफा बाजार के जानकारों का कहना है कि फिलहाल तकनीकी रूप से सोना और चांदी दोनों कमजोर स्थिति में हैं। विशेषज्ञों के अनुसार यदि अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोना 4,000 डॉलर प्रति औंस के स्तर से नीचे बना रहता है तो अगला मजबूत सपोर्ट 3,600 डॉलर प्रति औंस के आसपास दिखाई देता है। इसी तरह चांदी यदि 60 डॉलर प्रति औंस के नीचे टिकती है तो इसमें 50 डॉलर प्रति औंस तक गिरावट की संभावना बनी रह सकती है। हालांकि लगातार बिकवाली के कारण दोनों धातुएं अब ओवरसोल्ड जोन में पहुंच चुकी हैं। ऐसे में किसी भी सकारात्मक वैश्विक संकेत या कमजोर अमेरिकी आर्थिक आंकड़ों के बाद तेज तकनीकी रिकवरी भी संभव है।

क्या यह खरीदारी का सही समय है?

विशेषज्ञों का मानना है कि लंबी अवधि के निवेशकों को घबराने की जरूरत नहीं है। यदि किसी का निवेश लक्ष्य पांच से दस वर्ष या उससे अधिक का है तो ऐसी गिरावट चरणबद्ध निवेश (स्टैगर्ड इन्वेस्टमेंट) का अवसर बन सकती है। एकमुश्त निवेश करने के बजाय किस्तों में खरीदारी करना अधिक सुरक्षित रणनीति मानी जा रही है। इससे यदि कीमतें और गिरती हैं तो औसत खरीद मूल्य कम किया जा सकता है। वहीं अल्पकालिक ट्रेडर्स को फेडरल रिजर्व के अगले संकेत, अमेरिकी बॉन्ड यील्ड, डॉलर इंडेक्स और वैश्विक घटनाक्रमों पर लगातार नजर बनाए रखनी चाहिए।

दीर्घकाल में बनी रहेगी सोने की अहमियत

सोना सदियों से महंगाई, आर्थिक संकट और वैश्विक अनिश्चितताओं के दौरान सबसे भरोसेमंद निवेश विकल्प माना जाता रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि अल्पकाल में कीमतों में उतार-चढ़ाव स्वाभाविक है, लेकिन लंबी अवधि में सोना निवेश पोर्टफोलियो को स्थिरता देने का महत्वपूर्ण माध्यम बना रहेगा। यही कारण है कि वित्तीय सलाहकार कुल निवेश का एक हिस्सा सोना और चांदी जैसी कीमती धातुओं में रखने की सलाह देते हैं। मौजूदा गिरावट को केवल कमजोरी के रूप में नहीं, बल्कि रणनीतिक निवेश के अवसर के रूप में भी देखा जा सकता है। हालांकि किसी भी निवेश निर्णय से पहले अपनी जोखिम क्षमता, निवेश अवधि और वित्तीय सलाहकार की राय को जरूर ध्यान में रखना चाहिए।

खबर संक्षेप

जुलाई के मध्य में रोहतक में होगी सेना की भर्ती

महेंद्रगढ़। चरखी दादरी सेना भर्ती कार्यालय के प्रवक्ता ने बताया कि वर्ष 2027 के लिए भारतीय सेना में भर्ती के लिए आयोजित ऑनलाइन कॉमन एंट्रेंस एग्जाम में शामिल हुए अभ्यर्थियों के लिए सीईई परीक्षा का परिणाम घोषित होने के उपरांत जोनल भर्ती कार्यालय अंबाला के अंतर्गत वर्ष की पहली सेना भर्ती रैली का आयोजन सेना भर्ती कार्यालय रोहतक द्वारा किया जाएगा। यह भर्ती रैली संभावित रूप से जुलाई माह के मध्य में राजीव गांधी स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स रोहतक में आयोजित होगी।

कनीना में ई-रिक्शा से 4 बैटरियां चोरी, केस दर्ज

कनीना। वार्ड नंबर नौ में नहर के पास किराए पर रहने वाले बिजेंद्र कुमार, मूल निवासी ककराला ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि उनके घर के बाहर खडी ई-रिक्शा से चार बैटरी अज्ञात चोर चोरी कर ले गए। चोरी की गई बैटरियों की कीमत लगभग 10 हजार रुपये बताई गई है। पीड़ति की शिकायत पर कार्रवाई करते हुए कनीना सिटी थाना पुलिस ने केस दर्ज कर छानबीन शुरू कर दी है।

चेलावास में खेत से बोरवेल के पाइप चोरी

कनीना। गांव चेलावास में खेत से बोरवेल के नए पाइप और लोहे की नलकी चोरी करने के आरोप में पुलिस ने केस दर्ज किया है। शिकायतकर्ता सिकंदर ने पुलिस को दी अपनी शिकायत में बताया है कि उन्होंने खेत में नया बोरवेल करवाया था। जहां से एक जुलाई को ट्यूबवेल के पास रखे छह नए पाइप और दो लोहे की नलकी चोरी हो गईं। पीड़ित ने गांव के ही दो व्यक्तियों कुलदीप राजेश व कुलदीप सतबीर पर चोरी का शक जताया है। कनीना पुलिस ने शिकायत पर केस दर्ज कर आरोपितों को काबू कर लिया है।

नन्हे-मुन्नों ने रेन डांस पार्टी में की खूब मस्ती

नारनौल। श्रीकृष्ण सीनियर सेकेंडरी स्कूल भुंगारका में नर्सरी से यूकेजी तक के विद्यार्थियों के लिए रंगारंग रेन डांस पार्टी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में नन्हे-मुन्ने बच्चों ने बारिश की फुहारों, मधुर संगीत और मनोरंजक गतिविधियों का भरपूर आनंद लिया। विद्यालय परिसर में विशेष रूप से पूल साइड पर रेन डांस की आकर्षक व्यवस्था की गई, जहां संगीत की धुनों पर बच्चों ने उत्साहपूर्वक नृत्य किया। रंग-बिरंगी छतरियों के साथ आयोजित अम्ब्रेला डांस कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण रहा।

एमपीएचई एसोसिएशन ने सरकार पर लगाया कर्मियों की उपेक्षा का आरोप

आ गया आरपार की लड़ाई का समय आज घेरेंगे स्वास्थ्य मंत्री का आवास

एसोसिएशन ने दी आंदोलन तेज करने की चेतावनी कहा, कई बार सौंपे ज्ञापन पर कोई नहीं सुन रहा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

सरकार के रवैये से कर्मचारियों में व्याप्त है रोष

रेवाड़ी। ट्रामा सेंटर में पत्रकार वार्ता करते हुए एसोसिएशन के पदाधिकारी। फोटो : हरिभूमि

बहुउद्देश्यीय स्वास्थ्य कर्मचारी एसोसिएशन की ओर से अपनी लंबित मांगों के समाधान को लेकर 5 जुलाई को प्रस्तावित प्रदेशव्यापी रोष प्रदर्शन की सभी तैयारियां पूरी कर ली हैं। रविवार को एमपीएचई एसोसिएशन की ओर से रामुपरा स्थित स्वास्थ्य मंत्री के आवास का घेराव किया जाएगा। प्रदर्शन को लेकर एसोसिएशन की ओर से शनिवार को ट्रॉमा सेंटर में प्रेसवार्ता का आयोजन किया गया। इस मौके पर एसोसिएशन के पदाधिकारियों ने सरकार और स्वास्थ्य विभाग पर कर्मचारियों की लगातार उपेक्षा करने का आरोप लगाते हुए कहा कि अब आर-पार की लड़ाई का समय आ गया है। एसोसिएशन की प्रदेश अध्यक्ष शर्मिला देवी, राज्य महासचिव सहदेव आर्य सांगवान और राज्य प्रवक्ता संदीप कुंडू ने बताया कि कर्मचारियों की मांगों को लेकर सरकार और स्वास्थ्य मंत्री को कई बार ज्ञापन सौंपे गए। पांच स्मरण पत्र भी भेजे गए, लेकिन अब तक किसी भी मांग पर कार्रवाई नहीं की गई। सरकार के उदासीन रवैये से कर्मचारियों में गहरा रोष है। इसी के चलते रविवार को हजारों कर्मचारी स्वास्थ्य मंत्री के रामपुरा स्थित आवास का घेराव करेंगे। यदि इसके बाद भी मांगों पर सकारात्मक निर्णय नहीं लिया गया तो आंदोलन को और व्यापक रूप दिया जाएगा।

कर्मचारियों की उचित मांगों का शीघ्र करें समाधान

शर्मिला देवी ने बताया कि राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के तहत कार्यरत महिला एमपीएचडब्ल्यू कर्मचारियों को न्यायालय के आदेशानुसार नियमित करने, एफपीएल-6 वेतनमान लागू करने, एमसीएच, ड्रेस एवं यात्रा भत्ता, सेवानिवृत्ति लाभ तथा तबादला नीति लागू करने जैसी महत्वपूर्ण मांगें लंबे समय से लंबित हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि मिशन निदेशक कार्यालय इन मुद्दों पर लगातार उदासीन बना हुआ है, जिससे कर्मचारियों में असंतोष बढ़ता जा रहा है। उन्होंने कहा कि महानिदेशक स्वास्थ्य सेवाएं कार्यालय से जुड़े कई मामलों का भी वर्षों से समाधान नहीं हो पाया है। इनमें शहरी क्षेत्रों में आईपीएचएस मानकों के अनुसार स्थाई पद सृजित कर नियमित भर्ती करना, पदनाम संशोधन, दो वर्ष का प्रोबेशन पूरा कर चुकी महिला एमपीएचडब्ल्यू कर्मचारियों की सेवाएं नियमित रूप से पुष्टि करना, प्रोमोशनल स्केल जारी करना, तबादला प्रक्रिया शुरू करना तथा वर्ष 2020 से 2023 तक की लंबित एलटीसी का भुगतान प्रमुख रूप से शामिल हैं। राज्य महासचिव सहदेव आर्य सांगवान और राज्य प्रवक्ता संदीप कुंडू ने सरकार से कर्मचारियों की न्यायोचित मांगों का शीघ्र समाधान करने की अपील करते हुए कहा कि यदि सरकार ने अब भी सकारात्मक पहल नहीं की तो आंदोलन को प्रदेशभर में और तेज किया जाएगा। इस मौके पर जिला प्रधान दिनेश यादव, जिला सचिव जितेंद्र कुमार तथा जिला कैशियर राहुल दहिया सहित एसोसिएशन के अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे।

विद्यार्थियों ने चार्ट, मॉडल व हस्तशिल्प से मन मोहा

रेवाड़ी। प्रदर्शनी में अपने मॉडल दिखाते विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

■ सीहा स्कूल में लगी गृहकार्य प्रदर्शनी में विद्यार्थियों ने दिखाए कौशल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

शनिवार को गांव सीहा स्थित सीएम ईईई राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में हिमालय सदन की देखरेख में गृहकार्य प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसमें शताधिक विद्यार्थियों के चार्ट, मॉडल व हस्तशिल्प के कलात्मक नमूने प्रदर्शित किए गए। सीहा की सरपंच सरिता यादव के मुख्यातिथ्य में आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्यालय के प्राचार्य एवं साहित्यकार सत्यवीर नाहड़िया ने की।

लेखक एवं सामाजिक कार्यकर्ता यशपाल आर्य ने विशिष्ट अतिथि के रूप में शिरकत की। विद्यालय के प्राध्यापक हरीश कुमार ने बताया कि विद्यार्थियों को ग्रीष्मावकाश में दिए गए रोचक एवं रचनात्मक गृह कार्य पर आधारित प्रदर्शनी में छठी से बारहवीं कक्षा के विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। मॉडल मेकिंग जूनियर वर्ग में छात्र निशांत, तमन्ना व हर्षिता तथा शुभम, नंदिनी व अंकित ने सीनियर वर्ग में बाजी मारी। चार्ट मेकिंग में कनिष्क वर्ग से चंचल, देविका व लोकेश तथा पूनम, प्रिया व निशा का वरिष्ठ वर्ग में प्रदर्शन सर्वश्रेष्ठ रहा। हस्तशिल्प कला के जूनियर वर्ग में गौरव, राधा व पंकज तथा गौरी, सुमित व भावना सीनियर वर्ग में विजेता रही। प्राध्यापिका अलका, दिनेश कुमार, सीमा यादव, लक्ष्मी यादव तथा रेखा देवी ने निर्णायक मंडल की भूमिका निभाई। इस मौके पर प्राचार्य नाहड़िया ने गृहकार्य में रचनात्मकता पर प्रकाश डाला, वहीं मुख्य अतिथि सरपंच सरिता यादव ने बच्चों के प्रदर्शन की सराहना की।

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर एबीआरसी अनुराधा चौहान, स्कूल प्रबंधन समिति के प्रधान नरबीर, पूर्व प्रधान नरेश कुमार, नाहर सिंह व सुमन देवी सहित सभी स्टाफ सदस्य मौजूद थे। इस अवसर पर स्कूल प्रबंधन समिति की एक बैठक भी आयोजित की गई, जिसमें नए शैक्षणिक सत्र की स्कूल विकास योजना तथा विद्यालय के मुख्यमंत्री उत्कृष्टता प्रकल्प पर चर्चा हुई। स्कूल प्रबंधन समिति के प्रभारी प्राध्यापक नरेश कुमार ने सभी का आभार व्यक्त किया।

कर्मचारी यूनियन की सिंचाई मंत्री से कल होगी बातचीत

■ वार्ता का निमंत्रण मिलने पर सिंचाई मंत्री कैंप कार्यालय के घेराव का कार्यक्रम टला

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

हरियाणा गवर्नमेंट पीडब्ल्यूडी मैकेनिकल वर्कर्स यूनियन (रजि. नं. 41) संबंधित सर्व कर्मचारी संघ ने सिंचाई मंत्री के कैंप कार्यालय के 4 जुलाई के प्रस्तावित घेराव और प्रदर्शन को स्थगित करते हुए 6 जुलाई को वार्ता करने का निर्णय लिया है। यूनियन का कहना है कि सिंचाई मंत्री श्रुति चौधरी ने कर्मचारियों की मांगों पर चर्चा के लिए संगठन को लिखित रूप से 6 जुलाई को वार्ता के लिए आमंत्रित किया है। यूनियन के जिला सचिव विजेंद्र शर्मा ने बताया कि कर्मचारियों की समस्याओं के समाधान के लिए संगठन लगातार संघर्ष कर रहा है। उन्होंने महेंद्रगढ़ जिले की सभी इकाइयों का आंदोलन की तैयारियों और एकजुटता के लिए आभार जताया। कर्मचारियों के संघर्ष और आंदोलन के दबाव को देखते हुए सिंचाई मंत्री ने संगठन को लिखित पत्र भेजकर 6 जुलाई को बातचीत के लिए बुलाया है। पहले 4 जुलाई को भिवानी स्थित सिंचाई मंत्री के कैंप कार्यालय का घेराव और प्रदर्शन प्रस्तावित था, लेकिन वार्ता के निमंत्रण के बाद इसे फिलहाल रद्द कर दिया गया। यदि 6 जुलाई को होने वाली बैठक में कर्मचारियों की जायज मांगों पर संतोषजनक समाधान नहीं निकलता है तो राज्य कमेटी के आह्वान पर आगामी आंदोलन की रणनीति तय की जाएगी।

योजनाओं का लाभ प्रत्येक पात्र व्यक्ति तक पहुंचाएं

■ महिला अधिवक्ताओं एवं पैरा लीगल वॉलेंटियर्स को दिया प्रशिक्षण

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

रेवाड़ी। कार्यक्रम में जानकारी देतीं सीजेएम डॉ. रेनु सोलखे।

हरियाणा राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण पंचकूला की वार्षिक कार्ययोजना के अंतर्गत संचालित स्वस्थ बालक, सशक्त राष्ट्र कुपोषण के विरुद्ध अभियान के तहत जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की ओर से शनिवार को एडीआर सेंटर में महिला पैनल अधिवक्ताओं एवं महिला पैरा लीगल वॉलेंटियर्स के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम-सह-कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव एवं मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी डॉ. रेनु सोल्खे के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। इस मौके पर महिला पैनल अधिवक्ताओं एवं महिला पैरा लीगल वॉलेंटियर्स को मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य, पोषण, कुपोषण की रोकथाम, महिलाओं एवं बच्चों के विधिक अधिकारों तथा सरकार की ओर से संचालित विभिन्न योजनाओं के संबंध में जागरूक किया गया।

पैनल अधिवक्ता निशा रानी ने महिलाओं एवं बच्चों के विधिक अधिकारों, विधिक सेवा प्राधिकरण अधिनियम 1987 के अंतर्गत पात्र व्यक्तियों को उपलब्ध निःशुल्क विधिक सहायता, लोक अदालतों की उपयोगिता तथा जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के जागरूकता कार्यक्रमों की जानकारी दी। कहा कि महिलाओं, बच्चों तथा अन्य पात्र वर्गों को निःशुल्क विधिक सहायता प्राप्त करना उनका कानूनी अधिकार है। सिविल अस्पताल से डिप्टी सीएमओ डॉ. भंवर सिंह ने मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य, गर्भावस्था के दौरान नियमित स्वास्थ्य जांच, टीकाकरण, संस्थागत प्रसव, एनीमिया की रोकथाम, संतुलित एवं पौष्टिक आहार तथा शिशुओं के जीवन के प्रथम एक हजार दिनों में उचित पोषण के महत्व पर विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने कहा कि कुपोषण की रोकथाम के लिए जन-जागरूकता, समय पर स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता तथा सामुदायिक सहभागिता अत्यंत आवश्यक है। महिला एवं बाल विकास विभाग की जिला कार्यक्रम सहायक अंशिका ने राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम 2013, आंगनबाड़ी सेवाओं, पूरक पोषण आहार, गर्भवती महिलाओं एवं धात्री माताओं को उपलब्ध कराई जाने वाली सुविधाओं तथा बच्चों के पोषण से संबंधित विभिन्न सरकारी योजनाओं से अवगत कराया।

महिला पैनल अधिवक्ताओं की भूमिका अहम

इस अवसर पर सीजेएम डॉ. रेनु सोल्खे ने कहा कि स्वस्थ एवं कुपोषण मुक्त समाज का निर्माण तभी संभव है, जब विधिक जागरूकता, स्वास्थ्य सेवाओं और पोषण संबंधी सरकारी योजनाओं का लाभ प्रत्येक पात्र व्यक्ति तक समयबद्ध रूप से पहुंचे। उन्होंने कहा कि महिला पैनल अधिवक्ता एवं महिला पैरा लीगल वॉलेंटियर्स समाज में जागरूकता की मजबूत कड़ी हैं और उनके माध्यम से मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य, पोषण तथा विधिक अधिकारों संबंधी जानकारी व्यापक स्तर पर आमजन तक पहुंचाई जा सकती है। इस अवसर पर जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के अधिकारी, महिला पैनल अधिवक्ता, महिला पैरा लीगल वॉलेंटियर्स तथा स्वास्थ्य विभाग व महिला एवं बाल विकास विभाग के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

मार्केट कमेटी ने पौधरोपण कर मंत्री आरती सिंह राव का मनाया जन्मदिन

मंडी अटेली। मार्केट कमेटी अटेली में प्रदेश की स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव का 47वां जन्मदिन इस बार पर्यावरण संरक्षण को समर्पित एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत मनाया गया। कार्यक्रम को सामाजिक सरोकार से जोड़ते हुए मार्केट परिसर में पौधारोपण किया गया, जिसमें समिति के पदाधिकारियों, स्थानीय लोगों और कार्यकर्ताओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस मौके पर मार्केट कमेटी के चेयरमैन दिनेश जैलदार ने कहा कि बदलते समय में पर्यावरण संरक्षण हम सभी की जिम्मेदारी बन गई है। उन्होंने बताया कि एक पेड़ मां के नाम अभियान केवल एक पहल नहीं, बल्कि प्रकृति के प्रति हमारी भावनाओं और जिम्मेदारी का प्रतीक है। जन्मदिन जैसे खास अवसर को समाजहित के कार्यों से जोड़ना एक प्रेरणादायक कदम है। उन्होंने लोगों से आह्वान किया कि वे अधिक से अधिक पेड़ लगाएं और उनकी नियमित देखभाल करें, ताकि आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ और सुरक्षित वातावरण मिल सके। उपस्थित लोगों ने स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव को जन्मदिन की शुभकामनाएं दीं और उनके स्वस्थ, सुखी एवं दीर्घायु जीवन की कामना की। इस मौके पर स्वास्थ्य मंत्री आरती राव के पीए विकास यादव, सतीश डीएसपी, सतबीर सरपंच सुजापुर, सतीश यादव, पंकज गौड़, धर्मेंद्र सरपंच आदि मौजूद थे।

सूरज कॉलेज की उमंग को विवि की मेरिट लिस्ट में दूसरा स्थान

महेंद्रगढ़। इंदिरा गांधी यूनिवर्सिटी मीरपुर रेवाड़ी द्वारा बीएससी मेडिकल के छठे सेमेस्टर के परिणाम में सूरज कॉलेज के विद्यार्थियों का प्रदर्शन उत्कृष्ट रहा। कॉलेज निदेशक संदीप प्रसाद ने बताया कि बीएससी मेडिकल छठे सेमेस्टर की छात्रा उमंग पुत्री विजय सिंह ने 91.56 प्रतिशत अंक लेकर पूरे विश्वविद्यालय में द्वितीय एवं कॉलेज में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

इसी कोर्स की छात्रा आरती पुत्री रविन्द्र कुमार ने 87.78 प्रतिशत अंक के साथ कॉलेज में द्वितीय स्थान एवं तन्नु पुत्री कृष्ण कुमार ने 86.22 प्रतिशत अंक लेकर तृतीय स्थान प्राप्त किया। इसी कोर्स की छात्रा निशु कुमारी पुत्री जसविन्द्र ने 85.33 प्रतिशत, प्रशांत कौशिक पुत्र दर्शन कौशिक ने 83.11 प्रतिशत, प्राची पुत्री सुरत सिंह ने 81.33 प्रतिशत, हिमांशी पुत्री योगवर्थ ने 80.22 प्रतिशत, मोनिका पुत्री संजय ने 79.56 प्रतिशत, साक्षी पुत्री राजेश कुमार ने 78.22 प्रतिशत, मुस्कान पुत्री बलवान सिंह ने 76.44 प्रतिशत, मुस्कान पुत्री अजीतपाल ने 74.89 प्रतिशत, रितु पुत्री कृष्ण कुमार ने 74.67 प्रतिशत, आशा पुत्री प्रवीण ने 73.56 प्रतिशत अंक प्राप्त किए।

अंतरराष्ट्रीय गणित ओलंपियाड में जीत हासिल करने वालों का हुआ सम्मान

महेंद्रगढ़। बीआर आदर्श सीनियर सेकेंडरी स्कूल सेहलंग में अंतरराष्ट्रीय गणित ओलंपियाड में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों के लिए समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विद्यालय के चेयरमैन हरीश भारद्वाज ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की, जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्यालय की प्राचार्या ज्योति भारद्वाज ने की। समारोह के दौरान विद्यालय के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को उनकी उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए पदक एवं प्रमाण-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। कक्षा तीसरी से पूर्वा पुत्री योगेंद्र गांव बालरोड तथा पुलीत पुत्र योगेश गांव सेहलंग ने अंतरराष्ट्रीय गोल्ड मेडल प्राप्त कर विद्यालय का गौरव बढ़ाया। रेयांश पुत्र हरीश

भारद्वाज गांव सेहलंग तथा करिश्मा पुत्री संदीप गांव बालरोड ने अंतरराष्ट्रीय ब्रॉन्ज मेडल प्राप्त किया। गुंजन पुत्री प्रवीण कुमार गांव बसई तथा रौनक पुत्र पवन गांव खुडाना ने अंतरराष्ट्रीय सिल्वर मेडल प्राप्त किया। रौनक को सर्टिफिकेट ऑफ आउटस्टैंडिंग परफॉर्मेंस से भी सम्मानित किया गया।

विद्यार्थियों को साइबर अपराध से बचाव के लिए किया जागरूक

अनजान व्यक्ति से निजी जानकारी साझा न करें: रामपाल

नशे से होने वाले नुकसान के साथ ही ट्रैफिक नियमों की दी जानकारी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

रेवाड़ी। विद्यार्थियों को जागरूक करते हुए पुलिस टीम। फोटो : हरिभूमि

जिला पुलिस की नशा मुक्ति टीम ने शनिवार को न्यू इरा वर्ल्ड स्कूल व यदुवंशी शिक्षा निकेतन स्कूल कोसली में विद्यार्थियों को नशे के दुष्प्रभावों, साइबर आपराधों से बचाव व ट्रैफिक नियमों को लेकर जागरूक किया। इस अवसर पर टीम के इंचार्ज इंस्पेक्टर रामपाल ने कहा कि नशा व्यक्ति के शरीर, परिवार और समाज तीनों का सबसे बड़ा शत्रु है। यह न केवल स्वास्थ्य को बर्बाद करता है, बल्कि युवाओं का भविष्य भी अंधकारमय कर देता है। उन्होंने युवाओं को अभियान से जुड़ने का आह्वान किया। उन्होंने विद्यार्थियों को साइबर अपराध के खतरों से भी अवगत कराया। उन्होंने बताया कि आजकल अपराधी फोन कॉल, सोशल मीडिया या अन्य माध्यमों से व्यक्तिगत जानकारी जैसे ओटीपी व पासवर्ड हासिल करने की कोशिश करते हैं। ऐसे में सभी को सतर्क रहकर किसी भी अनजान व्यक्ति से अपनी निजी जानकारी साझा नहीं करनी चाहिए। पुलिस टीम ने विद्यार्थियों से यातायात के नियमों का पालन करने की भी अपील की। नशा मुक्ति टीम से एएसआई जितेन्द्र कुमार ने कहा कि यदि कोई भी असामाजिक तत्व, संदिग्ध व्यक्ति या वाहन दिखाई दे या आपातकालीन स्थिति हो तो तुरंत डायल 112 पर सूचना दें। इसके अलावा नशा गतिविधियों की सूचना मानस हेल्पलाइन नंबर 1933 पर करें। उन्होंने सभी विद्यार्थियों ने नशा और साइबर अपराधों से दूर रहने की शपथ भी दिलाई।

पुलिस भर्ती के दौरान मारे गए युवक के समर्थन में ग्रामीणों ने की पंचायत

हरिभूमि न्यूज ▶▶| मंडी अटेली

हरियाणा पुलिस भर्ती के तहत पंचकूला में आयोजित फिजिकल टेस्ट के दौरान 27 वर्षीय युवक कपिल की दौड़ते समय अचानक तबीयत बिगड़ने के बाद मौत हो जाने से क्षेत्र में शोक और आक्रोश का माहौल है। अटेली क्षेत्र के गांव सैदपुर निवासी कपिल की असामयिक मौत ने जहां परिवार को गहरे सदमे में डाल दिया है, वहीं ग्रामीणों ने इस घटना को लेकर प्रशासनिक व्यवस्था पर सवाल उठाए हैं। फिजिकल टेस्ट के दौरान दौड़ते समय कपिल की अचानक हालत बिगड़ गई और वह बेहोश होकर गिर पड़ा। परिजनों और ग्रामीणों का आरोप है कि मौके पर पर्याप्त और समय पर उचित चिकित्सकीय सुविधा उपलब्ध नहीं थी। उनका कहना है कि यदि तुरंत बेहतर चिकित्सा सहायता मिल जाती तो संभवत कपिल की जान बचाई जा सकती थी। घटना के बाद गांव सैदपुर में सरपंच विकास यादव की अध्यक्षता में ग्रामीणों की एक पंचायत आयोजित की गई, जिसमें बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए। पंचायत में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि कपिल के परिवार को उचित आर्थिक मुआवजा दिया जाए और उसकी विधवा पत्नी को सरकारी नौकरी प्रदान की जाए, ताकि परिवार को इस कठिन समय में सहारा मिल सके। सरपंच विकास यादव ने कहा कि यह केवल एक हादसा नहीं, बल्कि व्यवस्था की लापरवाही का परिणाम प्रतीत होता है

मंडी अटेली। कपिल की मौत मामले को लेकर पंचायत करते ग्रामीण। फोटो :हरिभूमि

खबर संक्षेप

केंद्रीय सहकारी बैंक टीम ने किया पौधरोपण

मूंदी। केंद्र सरकार की ओर से सहकार से समृद्धि के 5 स्वर्णिम वर्ष के अंतर्गत 29 जून से 6 जुलाई तक सहकारी सप्ताह मनाया जा रहा है। शनिवार को जिले के गांव मूंदी स्थित केंद्रीय सहकारी बैंक ने अभियान के तहत गांव नांगल स्थित ब्रांच में पौधरोपण किया। बैंक मैनेजर एवं पैक्स प्रबंधक धर्मवीर यादव के नेतृत्व में सभी कर्मचारियों ने मोगली, आंवला व आइकश के रोपित किए। बैंक मैनेजर धर्मवीर यादव ने बताया कि 6 जुलाई को केंद्रीय गृह व सहकारिता मंत्री अमित शाह ने अभियान के समापन अवसर पर दिल्ली में देश के सहकारी बैंकों के मैनेजर व पैक्स के कर्मचारियों को आमंत्रित किया है। कार्यक्रम में मूंदी बैंक व पैक्स से धर्मवीर यादव शामिल होंगे। इस मौके पर बैंक व पैक्स के कर्मचारी भीम सिंह, विशम्बर दयाल, जयबीर सिंह, महेश कुमार व अनीता देवी सहित अनेक लोग मौजूद थे।

लिलोढ़ से घर के बाहर बंधी भैंस चोरी

कोसली। क्षेत्र के गांव लिलोढ़ से चोर एक ग्रामीण के घर के बाहर बंधी हुई भैंस चोरी कर ले गए। चोरी की वारदात पास में लगे सीसीटीवी कैमरे में भी कैद हो गई। राजकुमार ने नाहड़ पुलिस को दी शिकायत में बताया कि 4 जुलाई तड़के कोई व्यक्ति उनके घर के बाहर बंधी भैंस को चुराकर ले गया। सूचना के बाद पुलिस मौके पर पहुंची। जब पुलिस ने घटना की सीसीटीवी फुटेज देखी तो एक व्यक्ति भैंस खोलकर ले जाता हुआ दिखाई दिया। पुलिस ने ग्रामीण की शिकायत व सीसीटीवी कैमरे की फुटेज के आधार पर पर मामला दर्ज कर आरोपी की तलाश शुरू कर दी है।

अब कर्मचारियों को महीने की 10 तारीख तक मिलेगा वेतन

चौथे दिन वार्डों में पहुंची कचरा कलेक्शन गाड़ियां

हड़ताल के कारण अभी भी सड़कों पर जमा कचरा, दो दिन में सुचारू होगी व्यवस्था

हरिभूमि न्यूज ⏭ रेवाड़ी

डोर-टू-डोर कचरा कलेक्शन कर्मचारियों ने शनिवार को चौथे दिन अपनी हड़ताल खत्म कर दी है। कचरा कलेक्शन फर्म के ठेकेदार की ओर से ड्राइवरों व हेल्परों के खातों में फिलहाल आधा वेतन डाल दिया है और आश्वासन दिया कि आगामी 10 जुलाई तक सभी का पूरा वेतन दे दिया जाएगा, जिसके बाद सहमति बनने पर कर्मचारियों ने वार्डो से कचरा कलेक्शन का कार्य शुरू कर दिया है। हालांकि शनिवार को भी काफी जगह गली-मोहल्लों में सड़कों से कचरे का उठान नहीं हो पाया, क्योंकि तीन दिन की हड़ताल में शहर में घरों से निकलने वाला करीब 350 टन कचरा जमा हो चुका है। आगामी दो से तीन दिन में व्यवस्था पटरी पर आने की संभावना है।

रेवाड़ी। डंपिंग यार्ड पर कचरा कलेक्शन गाड़ियां खाली करते कर्मचारी, अग्रसेन चौक यार्ड से कचरा लेकर जाता ट्रैक्टर तथा गोल चक्कर पर सड़क पर फैला हुआ कचरा।

छोटे डंपिंग स्टेशनों से उठाया कचरा

कचरा कलेक्शन ठेकेदार की ओर से पिछले 3 महीने से गाड़ियों के 117 ड्राइवरों व हेल्परों को वेतन नहीं दिया था, जिसके बाद कर्मचारियों ने एक जुलाई को हड़ताल शुरू की थी। इससे पहले भी कर्मचारी दो बार हड़ताल कर चुके है। श्याम एसोसिएट्स फर्म ने टेंडर मिलने के बाद 9 फरवरी का शहर से कचरा कलेक्शन का कार्य शुरू किया था। फर्म को नगर परिषद की ओर से 5 साल के लिए 23.5 करोड़ का डोर-टू-डोर कचरा कलेक्शन का ठेका दिया हुआ है, वही शहर का कचरा रामसिंहपुरा स्थित डंपिंग यार्ड में पहुंचाने के लिए 10 साल के लिए करीब 12 करोड़ का ठेका दिया हुआ है। ठेकेदार की ओर से ठेका लेने के 4 महीने बतीने के बाद भी अभी तक 32 वार्डों में जरूरत के हिसाब से पूरी गाड़ियों तक नहीं लगाई गई है। ठेकेदार के पास कचरा कलेक्शन के लिए फिलहाल 36 डीजल के टैंपों, 13 इलेक्ट्रिकल व्हीकल, 12 ट्रैक्टर व एक जेसीबी है, जबकि नगर परिषद ने एक डंपर व एक लोडर दिया हुआ है।

निर्धारित समय में वेतन नहीं दिया तो फिर आंदोलन

डोर-टू-डोर कचरा कलेक्शन कर्मचारी संघ के प्रधान राकेश कुमार ने बताया कि ठेकेदार की ओर से कर्मचारियों के खातों में आधी सेलरी डाल दी गई है। उन्होंने बताया कि ठेकेदार ने 10 जुलाई तक सभी कर्मचारियों के खातों में पूरा वेतन डालने का आश्वासन दिया है, जिसके बाद कर्मचारियों ने वार्डों से कचरा कलेक्शन करना शुरू कर दिया है। उन्होंने ने कहा कि वेतन नहीं मिलने से बच्चों की फीस भरने व घर चलाने में परेशानी हो रही थी। अगर ठेकेदार की ओर से निर्धारित समय में वेतन नहीं दिया तो फिर से आंदोलन की रणनीति बनाई जाएगी। कचरा कलेक्शन कर्मचारियों की ओर से ठेकेदार के समक्ष अपनी मांगे भी रखी गई। कर्मचारियों ने हर महीने 10 तारीख तक वेतन देने व वीकली ऑफ देने की मांग को लेकर ठेकेदार से लिखित में सहमति ली है।

रेवाड़ी। शिविर में योगाभ्यास करते हुए महिलाएं। फोटो : हरिभूमि

योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं, बल्कि संपूर्ण जीवन पद्धतिः दयाराम आर्य

हरिभूमि न्यूज ⏭ रेवाड़ी

पतंजलि योग समिति के तत्वावधान में शनिवार को द गवर्नमेंट एम्प्लॉइज को-ऑपरेटिव ग्रुप हाउसिंग सोसायटी सेक्टर-3 पार्ट-2 में पांच दिवसीय योग शिविर का शुभारंभ किया गया। समिति की जिला महिला प्रभारी सरोज आर्या के नेतृत्व में आयोजित शिविर में सोसायटी वासियों को नियमित योग, प्राणायाम, ध्यान और प्राकृतिक जीवनशैली से जोड़कर स्वस्थ एवं तनावमुक्त जीवन के प्रति जागरूक किया गया। जिला प्रभारी दयाराम आर्य ने कहा कि योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं, बल्कि संपूर्ण जीवन पद्धति है। नियमित योगाभ्यास शरीर, मन और विचारों में संतुलन स्थापित करता है। वर्तमान समय में अनियमित दिनचर्या, तनाव, शारीरिक निष्क्रियता और गलत खान-पान के कारण बढ़ रही जीवनशैली संबंधी समस्याओं से बचाव में योग महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। आर्य ने कहा कि योग एवं प्राणायाम से शरीर की कार्यक्षमता बढ़ती है, मन को शांति मिलती है और व्यक्ति में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। सरोज आर्या ने साधकों को सरल एवं उपयोगी योगासन, सूक्ष्म व्यायाम, प्राणायाम और ध्यान का अभ्यास कराया। विशेष रूप से महिलाओं से स्वयं योग अपनाने के साथ परिवार के बच्चों, युवाओं और बुजुर्गों को भी योग से जोड़ने का आह्वान किया। महिलाओं के स्वस्थ रहने से पूरा परिवार स्वस्थ और संस्कारित बनता है।

ये रहे उपस्थित

इस मौके पर शर्मिला, सुशीला, देवकी, भतेरी, कमलेश, सावित्री, बिनोद, कमला, संगीता, शर्मिला, सुनील, लक्ष्मी, संगीता, अनीता, नीलम और नमिता सहित सोसायटी की अनेक महिलाए उपस्थित थी।

विद्यार्थियों ने फलदार, फूल व छायादार पौधे लगाकर देखभाल का लिया संकल्प

रेवाड़ी। एएम टीम फाउंडेशन की ओर से शनिवार को पर्यावरण संरक्षण का लेकर जीएलएच स्कूल में पौधरोपण एवं जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। इस दौरान विद्यार्थियों को आम की गुठलियां और अन्य देशी पेड़ों के बीज एकत्रित करने के लिए प्रेरित किया गया। पर्यावरणविद् अनुराधा सैनी ने बच्चों को बीज और आम की गुठलियों से पौधे तैयार करने की सरल, वैज्ञानिक और व्यवहारिक तकनीक सिखाई। उन्होंने बताया कि फेंके जाने वाले बीजों और गुठलियों से हजारों नए पेड़ तैयार किए जा सकते हैं। टीम के प्रधान राहुल राठौर ने विद्यार्थियों को सस्टेनेबल लाइफ स्टाइल, जल बचत, प्लास्टिक का कम उपयोग और अधिक से अधिक पौधे लगाने का संदेश दिया। चेयरमैन आलोक एवं रिंकू ने विद्यार्थियों के साथ विद्यालय परिसर में 50 फलदार, फूल व छायादार पौधे लगाए और पौधों की नियमित देखभाल करने का संकल्प दिलाया। कोर्डिनेटर नीतू ने कहा कि पर्यावरण की रक्षा हमारी दैनिक आदतों का हिस्सा होनी चाहिए। उन्होंने बच्चों से घर और स्कूल दोनों जगह पौधों की देखभाल करने, पानी बचाने और स्वच्छता बनाए रखने की अपील की।

धवाना में शिविर लगाकर पशुपालकों को जागरूक किया

सप्ताह में दो दिन मिलेगी पशु चिकित्सक की सुविधा

- मिनरल मिक्सचर का इस्तेमाल करने पर दिया जोर

हरिभूमि न्यूज ⏭ रेवाड़ी

लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रो. डा. विनोद कुमार वर्मा के मार्गदर्शन में पशु विज्ञान केंद्र मनेठी की ओर से शनिवार को गांव धवाना में मिनरल मिक्सचर जागरूकता एवं बिक्री शिविर आयोजित किया गया। शिविर में बड़ी संख्या में पशुपालकों ने भाग लिया तथा 10 क्विंटल मिनरल मिक्सचर खरीदकर अपने पशुओं को नियमित रूप से खनिज मिश्रण खिलाने का संकल्प लिया। कोसली एमएलए अनिल यादव के निर्देश पर सप्ताह में दो दिन गांव में पशु चिकित्सक की सेवाएं शुरू कराने का निर्णय भी लिया गया। शिविर का आयोजन निदेशक विस्तार शिक्षा डॉ. गौतम के निर्देशन में डॉ. देवेन्द्र यादव एवं वैज्ञानिक डॉ. ज्योति शुंठवाल ने किया। इस मौके पर सरपंच बाबूलाल भी मौजूद रहे। सप्ताह में दो दिन पशु चिकित्सक डॉ. रविकांत सोनी की सेवाएं शुरू करने की घोषणा भी की गई, जिससे स्थानीय पशुपालकों को गांव में ही पशु चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध हो सकेंगी। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए डॉ. देवेन्द्र यादव ने कहा कि डेयरी पशुओं में थनैला एक गंभीर बीमारी है, जिससे दूध उत्पादन प्रभावित होता है और पशुपालकों को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है।

रेवाड़ी। आयोजित मिनरल मिक्सचर जागरूकता एवं बिक्री शिविर में मौजूद ग्रामीण।

उन्होंने बताया कि इस बीमारी से बचाव के लिए दूध दुहने से थनों की अच्छी तरह सफाई करनी चाहिए। साफ एवं कीटाणु रहित बर्तनों का उपयोग करना चाहिए तथा दूध निकालने के बाद थनों पर लाल दवा के घोल का छिड़काव करना चाहिए। डॉ. रविकांत सोनी ने पशुपालकों को सलाह दी कि दूध निकालने के बाद कम से कम आधे घंटे तक पशु को जमीन पर न बैठने दें।

खनिज तत्वों की कमी से रहें सावधान

दक्षिण हरियाणा में हरे चारे की कमी के कारण पशुओं में खनिज तत्वों की कमी सामान्य बात है। ऐसे में खनिज मिश्रण का नियमित उपयोग पशुओं के स्वास्थ्य और किसानों की आय दोनों के लिए बेहद लाभकारी है। उन्होंने यह भी बताया कि पशुपालकों को सही जानकारी के अभाव में पशुओं के दो ब्यातों के बीच का अंतर बढ़ जाता है, जिससे आर्थिक नुकसान होता है। खनिज मिश्रण के नियमित उपयोग से इस समस्या को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

लोकतंत्र की मजबूती में जागरूक नागरिक और शुद्ध मतदाता सूची की महत्वपूर्ण भूमिका

- मतदाता सूची का सही, अद्यतन एवं त्रुटिरहित होना स्वस्थ लोकतांत्रिक व्यवस्था की आधारशिला है

हरिभूमि न्यूज ⏭ रेवाड़ी

रेवाड़ी। स्कूल में विद्यार्थियों को जानकारी देते हुए प्राचार्य। फोटो : हरिभूमि

राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बीकानेर में विशेष गहन पुनरीक्षण अभियान को लेकर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

प्राचार्य मनोज कुमार की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों के माध्यम से उनके अभिभावकों, परिवार के सदस्यों एवं आम नागरिकों तक एसआईआर अभियान की महत्वपूर्ण जानकारी पहुंचाना तथा फॉर्म को सही ढंग से भरकर शीघ्र संबंधित बीएलओ के पास जमा कराने के लिए प्रेरित करना रहा। इस मौके पर प्राचार्य ने कहा कि लोकतंत्र की मजबूती में जागरूक नागरिक और शुद्ध मतदाता सूची की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। मतदाता सूची का सही, अद्यतन एवं त्रुटिरहित होना स्वस्थ लोकतांत्रिक व्यवस्था की आधारशिला है। उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे एसआईआर अभियान से संबंधित जानकारी अपने माता-पिता, परिवार के सदस्यों और आसपास के लोगों तक पहुंचाकर एक जागरूक नागरिक की भूमिका निभाएं।

ऑपरेशन ब्लू स्टार के शहीद सूबेदार होशियार सिंह यादव को पुण्यतिथि पर दी श्रद्धांजलि

रेवाड़ी। जिले के गांव बटोडी में शनिवार को ऑपरेशन ब्लू स्टार 1984 के अमर शहीद होशियार सिंह यादव की 42वीं पुण्यतिथि पर ग्राम पंचायत की ओर से उनकी याद में बनाए गए पार्क व स्मृति स्थल पर सम्मारोह का आयोजन किया गया। सुबह के समय पूर्व प्राचार्य बहादुर सिंह शास्त्री ने वैदिक मंत्रोउच्चारण से हवन सम्पन्न कराया। इस अवसर पर शहीद के पुत्र व शहीद होशियार सिंह यादव स्मृति मंच के अध्यक्ष अनिल यादव ने ग्राम वासियों, भूतपूर्व सैनिकों, शिक्षाविदों, युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि शहीद हमारे लिए पूजनीय है, क्योंकि उन्ही की शहादत की बदौलत हम आज स्वतंत्रता से जीवन जी रहे हैं। इस अवसर पर सरपंच उगंता यादव, सूबेदार बाबूलाल यादव, सूबेदार जयचंद बेरली, सरपंच अशोक यादव मामडीया आशमपुर, प्रेमपाल, कप्तान चदंगी राम जैनाबाद, सूबेदार धर्मपाल यादव, मास्टर संतलाल, अशोक कुमार, डा. ब्रह्मानंद, कृष्णा यादव डहीना, शिवकुमार शर्मा, लक्ष्मी नारायण, शिवचंद यादव, प्रदीप यादव लुहाना, प्रवक्ता अनिल कुमार, पूनम यादव, सूबेदार रामप्रसाद, रविदत्त शर्मा, लखीराम व विनोद कुमार आदि मौजूद रहे।

पर्यावरण संरक्षण प्रत्येक नागरिक का सामाजिक एवं नैतिक दायित्वः सीजेएम

जिला कारागार परिसर में लगभग 100 पौधे लगाए गए

हरिभूमि न्यूज ⏭ रेवाड़ी

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की ओर से चलाए जा रहे पौधरोपण अभियान के अंतर्गत शनिवार को जिला कारागार सहित विभिन्न स्थानों पर पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किए गए। मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी-सह-सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण डा. रेनू सोलखे ने जिला कारागार में पौधरोपण किया। जिला कारागार परिसर में लगभग 100 पौधे लगाए गए। इस अवसर पर सीजेएम डा. सोलखे ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण प्रत्येक नागरिक का सामाजिक एवं नैतिक दायित्व है। वर्तमान समय में पर्यावरण संतुलन बनाए रखने तथा भावी पीढ़ियों को स्वच्छ एवं स्वस्थ वातावरण उपलब्ध कराने के लिए अधिक से अधिक पौधरोपण करना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि पौधरोपण तभी सार्थक होगा, जब लगाए गए पौधों का संरक्षण एवं उनकी नियमित देखभाल भी सुनिश्चित की जाए। उन्होंने सभी नागरिकों से अपने जीवन में अधिकाधिक पौधे लगाने तथा उनके संरक्षण का संकल्प लेने का आह्वान किया।

रेवाड़ी। जिला कारागार परिसर में पौधे लगाते हुए सीजेएम।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
रेवाड़ी कार्यालय : दुकान नंबर 67, दुर्गा मार्केट, सेक्टर-1 वाला कच्चा रास्ता, नजदीक महाराणा प्रताप चौक, बावल रोड, रेवाड़ी सम्पर्क करें: 8053076211, 8295738500, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी 10X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 1500/- रु. 2000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
रेवाड़ी : दुकान नंबर 67, दुर्गा मार्केट, नजदीक महाराणा प्रताप चौक, बावल रोड, रेवाड़ी फोन : 9653537253, 9671434260

प्राचीन श्याम मंदिर के पास हुआ श्याम कुंड का निर्माण, निकाली कलश यात्रा

दुल्हन की तरह सजा श्याम दरबार, केंद्रीय मंत्री आज करेंगे श्याम कुंड समर्पित

रेवाड़ी। हुडिया जैतपुर में कलश यात्रा निकालते हुए महिलाएं, हुडिया जैतपुर में सजा श्याम बाबा का मंदिर। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ⏭ रेवाड़ी

जिले की सीमा के साथ राजस्थान के हुडिया जैतपुर में नवनिर्मित श्याम कुंड को केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव 5 जुलाई को श्रद्धालुओं को समर्पित करेंगे। इस मौके पर प्रसिद्ध गायक लखबीर सिंह लक्खा श्याम बाबा की महिमा का गुणगान करेंगे। इससे पूर्व शनिवार को श्याम कुंड से कलश यात्रा निकाली गई, जिसमें बड़ी संख्या में महिलाओं ने हिस्सा लिया। जैतपुर के प्राचीन श्याम मंदिर में बड़ी संख्या में श्रद्धालु दर्शन के लिए आते हैं। मंदिर के आसपास आवासीय एरिया होने के कारण यहां श्याम कुंड नहीं बना हुआ था। महामंडलेश्वर रामेश्वर दास महाराज ने मंदिर से कुछ दूरी पर जमीन लेकर भव्य श्याम कुंड का निर्माण कराया है। मंदिर में श्याम बाबा की प्रतिमा भी स्थापित कराई गई है। शनिवार को श्याम कुंड परिसर में हवन कराने के बाद कलश यात्रा निकाली गई। श्याम मंदिर कमेटी के प्रधान ताराचंद ने बताया कि श्याम कुंड का शुभारंभ केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव करेंगे। कार्यक्रम में राजस्थान के डिप्टी सीएम प्रेमचंद बैरवा, वन मंत्री संजय शर्मा, रोहित यादव व कई अन्य राजनेता अपनी उपस्थिति दर्ज कराएंगे। नवनिर्मित श्याम कुंड को भव्य रूप दिया गया है। श्रद्धालुओं की ज्यादा संख्या को देखते हुए श्याम कुंड के पास ही बड़ा टैंट लगाकर गायक कलाकारों की व्यवस्था की गई है। कार्यक्रम के बाद श्रद्धालुओं के लिए सुबह से ही प्रसाद वितरण की व्यवस्था भी की गई है।

श्याम कुंड परिसर में हवन करवाया

श्याम रंग में रंगी बाबा की नगरी

प्रधान ताराचंद यादव ने बताया कि पूरे जैतपुर धाम को आकर्षक विद्युत सज्जा, धार्मिक झांकियों और भव्य श्रृंगार से सजाकर श्याम नगरी का दिव्य स्वरूप प्रदान किया गया है। आयोजन को लेकर पूरे क्षेत्र में उत्साह का माहौल है और हजारों श्रद्धालुओं के पहुंचने की संभावना जताई जा रही है। उद्घाटन समारोह से पूर्व शनिवार को विशाल कलश यात्रा, बाबा श्याम की भव्य शोभायात्रा, प्रतिमा स्थापना एवं प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन किया गया।

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर महामण्डलेश्वर रामेश्वर दास महाराज, थाना प्रभारी प्रदीप, प्रधान ताराचंद यादव, सरपंच अनीता मोहित यादव, हरेन्द्र, सोनू सौदागर, सचिन दास महाराज, अर्जुन सरपंच, हरकेश यादव,ओमप्रकाश सहित अनेक गणमान्य नागरिक, संत-महात्मा एवं बड़ी संख्या में ग्रामवासी उपस्थित रहे।

नठेडा में 27.19 लाख की लागत से बनेगा नाला

कोसली। गांव नठेडा में गंदे पानी की निकासी के लिए 27 लाख 19 हजार रुपये की लागत से नाले के निर्माण को मंजूरी मिल गई है। योजना के क्रियान्वयन से वर्षों से चली आ रही जलभराव और गंदे पानी की समस्या का स्थाई समाधान होगा। नठेड़ा निवासी भाजपा के वरिष्ठ नेता वीर कुमार यादव ने बताया कि नाले के निर्माण से गांव में स्वच्छता व्यवस्था मजबूत होगी, जलभराव से निजात मिलेगी और ग्रामीणों को बेहतर एवं स्वस्थ वातावरण उपलब्ध होगा। यह परियोजना गांव के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। वीर कुमार यादव व गांव के सरपंच मनोज यादव ने ग्रामवासियों की ओर से मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी, पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री कृष्णलाल पंवार तथा कोसली विधायक अनिल यादव का आभार व्यक्त किया है।

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक, रविवार 5 जुलाई 2026

क्या कभी हो पाएगी एलियन से मुलाकात !

क्या एलियन कभी पृथ्वी पर आएंगे? क्या उनसे हमारी मुलाकात हो पाएगी? इस सवाल का फिलहाल कोई सीधा 'हां' या 'ना' में जवाब देना मुश्किल है। एलियंस का धरती पर आना भले ही अभी विज्ञान कथाओं की तरह लगता हो, लेकिन वैज्ञानिक प्रयासों से भविष्य में, असंभव सा लगने वाला कुछ भी संभव हो सकता है।

कवर स्टोरी
शिखर चंद जैन

रात के समय जब हम आसमान में टिमटिमाते हुए तारों को देखते हैं, तो हमारे मन में एक सवाल बार-बार उठता है, 'क्या इस विशाल ब्रह्मांड में हम अकेले हैं?' या फिर किसी दूर के ग्रह पर हमारे जैसे ही या हमसे भी ज्यादा समझदार जीव रहते हैं? इन्हीं बाहरी दुनिया के जीवों को हम 'एलियन' या 'एक्स्ट्राटेरेस्ट्रियल' कहते हैं। गणितीय संभावनाओं को देखें तो ब्रह्मांड में कहीं न कहीं जीवन जरूर होना चाहिए। लेकिन अंतरिक्ष की असीम दूरियों को देखते हुए, उनका हमारे पास आना या हमारा उन तक पहुंचना बहुत ही कठिन काम है। वैज्ञानिकों का मानना है कि आने वाले कुछ दशकों में, जैसे-जैसे हमारी तकनीक और बेहतर होगी, हम शायद सौर मंडल के किसी चांद या बाहरी ग्रह पर जीवन के छोटे अंश (जैसे बैक्टीरिया) खोजने में सफल हो जाएंगे।

क्यों बरकरार है संभावना

वैज्ञानिकों के अनुसार, हमारे ब्रह्मांड में अरबों आकाशगंगाएं हैं और हर आकाशगंगा में खरबों तारे और ग्रह हैं। इतनी बड़ी जगह में सिर्फ हमारी पृथ्वी पर ही जीवन हो, ऐसा होना थोड़ा मुश्किल लगता है। इसलिए लगता है कि इस यूनिवर्स में कोई न कोई दूसरी दुनिया हो सकती है। खगोल वैज्ञानिक भी इस विषय पर यही सोचते हैं। इसीलिए वे सालों से एलियंस की खोज कर रहे हैं।

क्या एलियन पृथ्वी पर आएंगे!

हालांकि आम लोगों का मानना है कि कभी न कभी एलियन पृथ्वी पर आए होंगे या आएंगे। लेकिन वैज्ञानिक इस सवाल का जवाब तर्क के आधार पर खोजते हैं। एलियन पृथ्वी पर क्यों आना चाहेंगे? इसके वे कई तर्क देते हैं-

नए घर की खोज: जैसे हमारे वैज्ञानिक मंगल ग्रह पर जीवन तलाश रहे हैं, वैसे ही एलियन भी अपने रहने के लिए एक नए और सुरक्षित ग्रह की तलाश में पृथ्वी पर आ सकते हैं।

संसाधनों की तलाश: अगर उनके अपने ग्रह के प्राकृतिक संसाधन जैसे पानी, खनिज या ऊर्जा आदि खत्म हो गए हों, तो वे पृथ्वी के संसाधनों का उपयोग करने के लिए यहां का रुख कर सकते हैं।

जिज्ञासा और शोध: हो सकता है कि एलियन भी हमारी पृथ्वी के वैज्ञानिकों की तरह खोजी स्वभाव के हों। वे ब्रह्मांड के दूसरे जीवों यानी हम इंसानों के बारे में जानने और हमसे दोस्ती करने के लिए हमारे पास आ सकते हैं।

तकनीकी श्रेष्ठता: अगर कोई सभ्यता हमसे लाखों साल पुरानी है, तो उनके पास ऐसे स्पेसशिप हो सकते हैं जो रोशनी की रफ्तार से

भी तेज चल सकें। ऐसी तकनीक होने पर उनके लिए पृथ्वी तक आना बहुत आसान होगा।

इसके विपरीत एलियन का आना क्यों मुश्किल है, इसके भी कुछ तर्क देते हैं-

अत्यधिक दूरी: ब्रह्मांड इतना बड़ा है कि हमारे सबसे करीबी तारे प्रॉक्सिमा सेंचुरी तक पहुंचने में भी आज की तकनीक से हजारों साल लग जाएंगे। एलियंस के लिए भी इतनी लंबी दूरी तय करना एक बड़ी चुनौती होगी।

समय का चक्र: हो सकता है कि ब्रह्मांड के किसी कोने में एलियन रहे हों, लेकिन वे इंसानों के पैदा होने से करोड़ों साल पहले ही खत्म हो चुके हों, या फिर वे तब आएंगे, जब इंसान धरती से गायब हो चुके होंगे।

संवाद की कमी: हमारी भाषा, रेडियो सिग्नल और सोचने का तरीका उनसे बिल्कुल अलग हो सकता है। मुमकिन है कि वे हमारे सिग्नलों को समझ ही न पा रहे हों।

वैज्ञानिक शोध और प्रयास

वैज्ञानिकों ने एलियंस को ढूंढ़ने और उनसे संपर्क करने के लिए कई प्रयास किए हैं।

सेटी प्रोजेक्ट: सर्च फॉर एक्स्ट्रा टेरेस्ट्रियल इंटेलिजेंस, दुनिया का सबसे बड़ा संगठन है, जो अंतरिक्ष से आने वाले रहस्यमयी सिग्नलों पर नजर रखता है। वैज्ञानिक बड़े-बड़े रेडियो टेलीस्कोप का इस्तेमाल करके आसमान से आने वाली आवाजों और तरंगों को सुनते हैं, ताकि एलियंस का कोई संदेश पकड़ा जा सके।

वोयाजर के गोल्डन रिकॉर्ड्स: साल 1977 में नासा ने अंतरिक्ष में दो स्पेसक्राफ्ट भेजे थे, जिनका नाम 'वोयाजर 1' और 'वोयाजर 2' है। इन स्पेसशिप में एक तांबे की बनी सीडी जैसी 'गोल्डन डिस्क' रखी गई है। इस डिस्क में पृथ्वी की आवाजें, संगीत, 55 भाषाओं में नमस्कार और हमारे ग्रह का नक्शा दर्ज है, ताकि अगर कभी यह किसी एलियन को मिले, तो वे हमारे बारे में जान सकें।

यूएफओ और यूएपी की जांच: दुनिया भर में कई बार आसमान में उड़ने वाली अजीबो-गरीब चीजों जैसे उड़न तश्तरी को देखने का दावा किया गया है। अब अमेरिकी सरकार और नासा जैसी एजेंसियां इन्हें 'यूएपी' (अनआइडेंटिफाइड एनोमैलुअस फैनोमेना) कहकर इन पर आधिकारिक रिसर्च कर रही हैं, ताकि यह साफ हो सके कि ये एलियंस के यान हैं या कोई प्राकृतिक घटना।

बहरहाल, भविष्य में कभी दूसरे ग्रह के वासियों एलियंस से पृथ्वीवासियों की कभी मुलाकात हो पाएगी या नहीं यह तो अभी नहीं कहा जा सकता लेकिन दुनिया भर के वैज्ञानिक इस कोशिश में हर संभव प्रयास कर रहे हैं। *

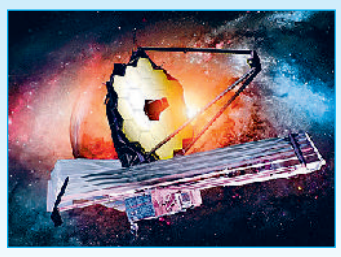

केपलर-जेम्स वेब टेलीस्कोप

नासा के इन आधुनिक टेलीस्कोपों का काम अंतरिक्ष में 'एक्सोप्लैनेट्स' यानी हमारे सौर मंडल से बाहर के ग्रह को खोजना है। वैज्ञानिकों ने अब तक हजारों ऐसे ग्रह खोजे हैं, जो 'गोल्डीलॉक्स जोन' में हैं। इसका मतलब है कि ये ग्रह अपने तारे से न तो बहुत ज्यादा गर्म हैं और न ही बहुत ज्यादा ठंडे, जहां पृथ्वी की तरह पानी और जीवन मौजूद हो सकता है। इसमें जीवन की संभावना भी हो सकती है।

मार्स मिशन

हमारे सबसे नजदीकी ग्रह मंगल पर पानी और जीवन के निशान खोजने के लिए भारत का 'मंगलयान', नासा के 'परसवेरेंस' रोवर जैसे कई मिशन भेजे गए हैं। इनके जरिए वैज्ञानिक मंगल ग्रह पर सूक्ष्मजीवों के जीवाश्म ढूंढ़ रहे हैं, जो अंतरिक्ष वासी एलियन या जीवन का पहला ठोस सबूत हो सकते हैं।

चिंताजनक है लगातार बढ़ता अंतरिक्ष में वेस्ट मैटर

जिस तरह से हम सबने अपनी पृथ्वी पर प्रदूषक वस्तुओं और कूड़े-कचरे का अंबार लगा रखा है, कुछ ऐसा ही हाल अंतरिक्ष का भी होता जा रहा है। स्पेस में स्पेसक्राफ्ट, एस्ट्रोनॉट्स और सैटेलाइट्स का वेस्ट मैटर भविष्य में गंभीर समस्या पैदा कर सकता है।

स्पेस इश्यू
अंजू जैन

जब हम रात में आसमान की तरफ देखते हैं, तो हमें टिमटिमाते तारे, चंद्रमा और कभी-कभी गुजरते हुए सैटेलाइट्स (उपग्रह) दिखाई देते हैं। यह नजारा बेहद जादुई लगता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि हमारे इस खूबसूरत अंतरिक्ष में एक बहुत बड़ी मुसीबत धीरे-धीरे पैर पसार रही है? इस मुसीबत का नाम है-'अंतरिक्ष का कचरा' या 'स्पेस डेब्री'।

क्या है स्पेस डेब्री: जैसे हम अपनी पृथ्वी पर प्लास्टिक, रैपर्स और खराब सामान फेंककर इसे गंदा कर रहे हैं, ठीक वैसे ही इंसानों ने अंतरिक्ष को भी कबाड़खाना बनाना शुरू कर दिया है। अंतरिक्ष कचरा या स्पेस जंक उन सभी मानव-निर्मित बेकार चीजों को कहते हैं, जो अब किसी काम की नहीं रहीं और पृथ्वी के चारों ओर अंतरिक्ष में चक्कर काट रही हैं। इस कचरे में बेकार हो चुके पुराने सैटेलाइट्स, रॉकेट्स के छूटे हुए टुकड़े, अंतरिक्ष यात्रियों के हाथ से छूटे हुए औजार (जैसे स्क्रू-ड्राइवर, ग्लव्स) और सैटेलाइट्स के आपस में टकराने से बने करोड़ों छोटे-छोटे टुकड़े शामिल हैं। वैज्ञानिकों के अनुमान के अनुसार, इस समय अंतरिक्ष में लाखों छोटे-बड़े टुकड़े तैर रहे हैं, जो एक बड़े खतरे की घंटी हैं।

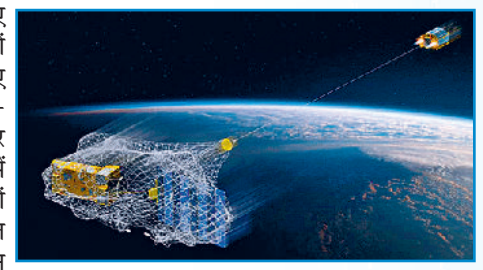

स्पेस डेब्री में शामिल चीजें: स्पेस डेब्री में बहुत कुछ हो सकता है। जैसे-जब किसी उपग्रह का जीवनकाल खत्म हो जाता है या उसका ईंधन समाप्त हो जाता है, तो वह वहीं अंतरिक्ष में निष्क्रिय होकर घूमने लगता है। उपग्रहों को अंतरिक्ष में छोड़ने के बाद रॉकेट के निचले और ऊपरी हिस्से अलग हो जाते हैं। ये हिस्से अंतरिक्ष में ही तैरते रह जाते हैं। जब दो सैटेलाइट्स आपस में टकराते हैं, तो उनके परखच्चे उड़ जाते हैं। एक टक्कर से हजारों नए छोटे-छोटे तीखे टुकड़े बन जाते हैं।

कुछ देश अपनी मिसाइल क्षमता को जांचने के लिए अंतरिक्ष में अपने ही पुराने सैटेलाइट को मिसाइल से उड़ा देते हैं। इससे पल भर में बेशुमार कचरा फैल जाता है।

स्पेस वेस्ट से संकट: अब आप सोच रहे होंगे कि अंतरिक्ष तो इतना विशाल है, फिर वहां थोड़े से कबाड़ से क्या फर्क पड़ता है? अंतरिक्ष हमारा भविष्य है। अगर आज हमने इसकी सफाई पर ध्यान नहीं दिया, तो आने वाली पीढ़ी के लिए ब्रह्मांड के रहस्य जानने के सारे रास्ते बंद हो जाएंगे। इसके कई खतरनाक परिणाम हो सकते हैं। अंतरिक्ष में ये टुकड़े धीरे-धीरे नहीं तैरते। इनकी रफ्तार बंदूक की गोली से भी 10 से 15 गुना तेज होती है, लगभग 28,000 किलोमीटर प्रति घंटा। इतनी रफ्तार में एक छोटा-सा पेंट का टुकड़ा या पेंच भी किसी सैटेलाइट से टकराए, तो उसे पूरी तरह तबाह कर सकता है। इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन में हमेशा हमारे वैज्ञानिक रहते हैं। यदि कोई बड़ा टुकड़ा स्पेस स्टेशन से टकरा जाए, तो वहां रहने वाले अंतरिक्ष यात्रियों की जान पर बन आ सकती है। उन्हें कई बार खुद को बचाने के लिए आपातकालीन कैप्सूल में छिपना पड़ता है।

हम मोबाइल के जरिए जो बात करते हैं, जीपीएस से रास्ता देखते हैं, टीवी देखते हैं और मौसम का पूर्वानुमान लगाते हैं, वे सब अंतरिक्ष में मौजूद सैटेलाइट्स की वजह से संभव होता है। अगर कचरे की वजह से ये सैटेलाइट्स नष्ट हो गए, तो हमारी पृथ्वी की आधुनिक लाइफलाइन एकदम रुक-सी जाएगी। अगर अंतरिक्ष में कचरा बहुत ज्यादा बढ़ गया, तो वे आपस में टकराकर और अधिक कचरा बनाएंगे। एक समय ऐसा आएगा कि पृथ्वी के चारों ओर कचरे की ऐसी घनी दीवार बन जाएगी कि इंसान कभी नया रॉकेट या सैटेलाइट अंतरिक्ष में भेज ही नहीं पाएगा। हम हमेशा के लिए पृथ्वी पर कैद हो जाएंगे।

निदान और समाधान: अंतरिक्ष में बढ़ रहे कचरे की इस समस्या के समाधान के लिए वैज्ञानिक लगातार प्रयास कर रहे हैं। दुनिया भर की स्पेस एजेंसियां जैसे भारत की इसरो, अमेरिका की नासा इस मलबे को साफ करने के लिए बेहद अनोखे तरीकों पर काम कर रही हैं। वैज्ञानिक ऐसे विशेष सैटेलाइट बना रहे हैं, जो अंतरिक्ष में जाकर बड़े मलबे पर जाल फेंकेंगे या हारपून (भाला) मारकर उसे पकड़ेंगे और खींचकर पृथ्वी के वायुमंडल की तरफ ले आएंगे।

कुछ जापानी कंपनियां ऐसे सैटेलाइट्स का परीक्षण कर रही हैं, जिनमें बहुत शक्तिशाली चुंबक लगे होंगे। ये चुंबक लोहे और धातु के मलबे को अपनी ओर आकर्षित करके चिपका लेंगे। इस तरह कई और तकनीकें अपनाई जा रही हैं। संभव है इसका स्थायी समाधान खोज लिया जाएगा। *

गजल
हबीब कैफी

चला गया कोई

उम्र अपनी बढ़ा गया कोई
नाम लेते ही आ गया कोई
मैंने थामा था हाथ कांटों में
फूल पाकर छुड़ा गया कोई
उसके सारे निशान जिंदा हैं
कैसे कह दूं चला गया कोई
इक तने पर लिखे थे बरसों से
नाम दोनों मिटा गया कोई
नींद यूं ही नहीं हुई गायब
तेरे किस्से सुना गया कोई
सिर्फ इक बात मैंने पूछी थी
बातें क्या-क्या सुना गया कोई
जिक्र जब भी वफा का आया है
सर झुका कर चला गया कोई

व्यंग्य / सूर्यकुमार पांडेय

महंगाई से मुलाकात

चाहने को हम भी बहुत कुछ चाहते हैं। हमारी पहली चाहत तो यह ही है कि अपने पास अकूत वैध संपत्ति हो। वैध इसलिए, क्योंकि बुल्डोजर से सबको डर लगता है। बड़े-बड़े मुर्गे हलाल हो गए, फिर भला इस पिद्दी के शोरबे की क्या ही औकात है? हमारी दूसरी चाहत है कि महंगाई नाम की चीज को अपने देश से धक्के मार कर बाहर निकाल देना चाहिए। अंतर्मन में कुछ ऐसी भी चाहतें हैं, जिन्हें सार्वजनिक कर दें तो जूते पड़ने लगेंगे। हमारे एक मित्र ने एक महिला को सिर्फ 'आइ लव यू' कहा था। एक वह दिन था और एक आज का दिन है, अस्पताल से लौटकर आया है और प्रत्येक महिला को बुआ-दीदी से नीचे नहीं बोलता है।

इंसान कामनाओं का कोष है। मनुष्य की इच्छाएं अनंत हैं। सबको फेसबुक-एक्स आदि के दरिया में डालकर अपनी भड़ास निकालने से अच्छा है कि भाग्यवादी बन जाओ। 'जाही विधि राखे राम, ताही विधि रहिए।' हम भी रह ही रहे हैं। घोर महंगाई की चपत खाकर भी हंस रहे हैं। यूं किसी के चाहने या न चाहने से क्या होता है? भला मैं भी कहां चाहता था, फिर भी आज महंगाई से मेरी मुलाकात हो ही गई। वैसे यह कोई नई बात नहीं है। पहले कभी-कभार भेंट होती थी। इन दिनों वह मुझसे रोज ही किसी-न-किसी बहाने मेरे घर पर मिलने आ जाया करती है। जब मैं घर से बाहर रहता हूं तो वह वहां पर भी मुझसे टकरा जाती है। बाजार जाऊं तो वहां भी मिल जाती है। सड़क पर चल रहा होता हूं, तब भी वह हमारा पीछा नहीं छोड़ती है। पत्नी कहती है, 'यह मुई मेरी सौत है। इसकी निगाह तुम्हारे शरीर के साथ तुम्हारी जेब पर भी रहती है।'

मैं अकसर यह महसूस करता हूं कि मेरी जेब में रखा हुआ पर्स भी जरूरत से ज्यादा दुबला हो चुका है। महंगाई डायन के प्रकोप के चलते 'चंद क्वॉइन' ही शेष बचे हुए हैं। गनीमत है कि वह पूरी तरह खाली नहीं हुआ है। शायद इसी दुबले पर्स पर महंगाई डाका डालने पर उतारू है। जिसके पास धन नहीं है, उसको न चोरी का डर सताता है और न रहजनी का। उसे एकमात्र डर सताता है तो महंगाई का।

मेरा प्रतिदिन महंगाई से इसी तरह मिलना होता रहा तो एक दिन इस गरीब की जान ही निकल जाएगी। आप जानते हैं कि गरीब की जान उसकी हलक में अटकी होती है। यह उस चिड़िया की तरह होती है, जिसे जब तक दाना-पानी मिलता रहता है, चहकती रहती है, जिस दिन मिलना बंद हो गया, फुर्र से उड़ जाती है। लोग यूं ही प्राण को पखेरू नहीं कहते हैं।

मैं इस नामाकूल महंगाई से कितना भी बचना चाहता हूं, लेकिन वह है कि हाथ धोकर मेरे गले पड़ती जा रही है। आज महंगाई फिर एक बार मुझसे मिलने आई है। वह आवश्यकता से अधिक मोटी दिख रही है। पिछली बार जब उससे मिलना हुआ था, तब भी वह मोटी ही थी, लेकिन इस बार उसके शरीर की चर्बी पर एक और परत चढ़ चुकी है। वैसे भी जो प्रतिदिन दूसरों की जेब पर डाका डालता हो, उसका मोटा हो जाना अचरज की बात नहीं है। मैं अपने आस-पास के ऐसे तमाम लोगों को जानता हूं, जो दूसरों को लूटते रहते हैं और मोटे हो जाते हैं। महंगाई भी पुष्ट हो रही है। वह मुझसे कहने लग गई, 'तुम मेरे नाम का रोना रोते रहते हो, मैंने सोचा आज एक बार और मिल लेती हूं! कहो, कैसे मिजाज हैं?' मैंने कहा, 'मिजाज की छोड़ो। तुमने हमें कहीं का नहीं छोड़ा है। तुम जिस अनुपात में मोटी होती चली जा रही हो, हम उसी अनुपात में दुबले हो रहे हैं। उधर तुम्हारी खुराक बढ़ती जा रही है, इधर हम अपने को किसी दिहाड़ी मजदूर की पगार जैसा बेबस पाते हैं।'

महंगाई जैसे आज विश्व हास्य दिवस मनाने के मूड में थी। वह पहले खूब हंसी, फिर मुझे छेड़ती हुई बोली, 'देख रही हूं। तुम्हारे पांवों में बेबसी के घुंघरू बंधे हुए है, फिर भी तुम ठुमक रहे हो। तुम जैसे बकरे को कहां पता है कि कल मैं तुमको किस भारी-भरकम रूप में मिलने वाली हूं!' *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

विडंबनाओं पर कटाक्ष

आज के बहुरूपिए समय में तमाम तरह की विडंबनाओं और विसंगतियों के संग जीने के लिए हम सब इतने अभ्यस्त हो गए हैं कि किसी भी प्रकार के विद्रूप में असहज महसूस नहीं करते हैं। लेकिन एक व्यंग्यकार की सजग दृष्टि न केवल जीवन और व्यवस्था में धंसे विद्रूप को इंगित करती है, उस पर कटाक्ष भी करती है। सुपरिचित व्यंग्यकार मुरली मनोहर श्रीवास्तव के ऐसे ही चुने हुए 65 व्यंग्यों का संग्रह 'डेढ़ इंच मुसकान वाले लोग' हाल में छपकर आया है। इनमें कहीं वे नेशनल कैरेक्टर से लेकर, आटा से ज्यादा डाटा की चिंता करते नजर आते हैं, तो

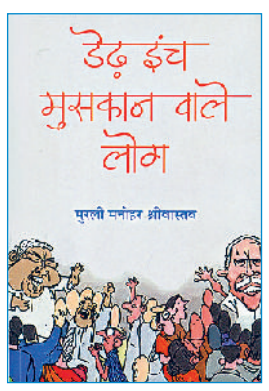

कहीं चुटकी लेते हुए मीडिया का महिमा मंडन करते दिखते हैं। 'ऑफिस रस' शीर्षक व्यंग्य में वह लिखते हैं, 'जिसे एक बार ऑफिस रस की लत लग गई, वह इसकी प्रॉपर डोज के बिना रह ही नहीं पाता। वह कहीं भी रहे, किसी भी हाल में पड़ा हो, इस रस की प्राप्ति के लिए छटपटाता रहता है।' हर खास-ओ-आम की जिंदगी में आज की तारीख में इंटरनेट डाटा का क्या महत्व हो चुका है, इस बारे में व्यंग्यकार की टिप्पणी ध्यान देने योग्य है। 'आटा और डाटा' शीर्षक व्यंग्य में वह कहते हैं, 'कई बार लगता है कि आटा न भी मिले तो चलेगा पर डाटा खत्म हो गया तो जीकर क्या करेंगे? लड़ाई यह है कि आटा जन-जन तक पहुंचा कि डाटा?' *

पुस्तक: डेढ़ इंच मुसकान वाले लोग (व्यंग्य संग्रह), **लेखक:** मुरली मनोहर श्रीवास्तव, **मूल्य:** 400 रुपए, **प्रकाशक:** विद्या विहार, नई दिल्ली

हरिभूमि रविवार भारती
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक, रविवार 5 जुलाई 2026

सीजनल टूरिज्म / समीर चौधरी

हर नेचर लवर टूरिस्ट, मानसून में भीगी हरी-भरी पहाड़ी वादियों को करीब से निहारना चाहता है। हालांकि आमतौर पर इस सीजन को ट्रैकिंग के लिए सुटेबल नहीं माना जाता है। लेकिन कुछ ऑफबीट-सुरक्षित हिमालयी ट्रैकिंग स्पॉट्स पर जाकर आप अपनी इस चाहत को पूरा कर सकते हैं। ऐसे ही कुछ बेमिसाल ट्रैकिंग स्पॉट्स पर एक नजर।

मानसून में करिए फुल एंज्वॉय ये हिमालयन ट्रैकिंग स्पॉट्स

अनुभवी ट्रैकर्स के लिए परफेक्ट परांग ला ट्रैक, हिमाचल प्रदेश

परांग ला ट्रैक (18,400 फीट की ऊंचाई पर स्थित) अनुभवी ट्रैकर्स के लिए परफेक्ट माना जाता है, क्योंकि लद्दाख व स्पीति को जोड़ने वाला इसका पथरीला, तीखी ढलान वाला रूट थोड़ा चुनौतीपूर्ण हो सकता है। आप इस ट्रैक पर शुरुआत लेह के करजोक गांव से या स्पीति के चिचम/किब्बर गांव से कर सकते हैं। कठिन रास्तों के बावजूद आपको जादुई नजारे देखने को मिलेंगे। इस दौरान आप खिले हुए जंगली फूल, गहरी नीली त्सो मोरिरी झील के अलावा किआंग या तिब्बती जंगली गधों के झुंडों को भी कूदते-दौड़ते हुए देख सकते हैं। इसे विजिट करने का सबसे अच्छा समय जुलाई के मध्य से सितंबर की शुरुआत तक होता है। *

मोहक नजारा दिखाए मरखा घाटी, लद्दाख

जुलाई और सितंबर के मध्य में मरखा घाटी (17,060 फीट की ऊंचाई पर स्थित) की दूधिया सफेद नदियां, सुंदर लैंडस्केप और विशाल पहाड़ों की पृष्ठभूमि में हरी-भरी वादियां मन मोह लेती हैं। यहां से कांग यत्से पहाड़ का दिलकश नजारा भी दिखता है। यह ट्रैक लेह से आरंभ होता है और फिर जब आप ऊपर की तरफ बढ़ते हैं तो हेमिस नेशनल पार्क, सुदूर गांवों और आध्यात्मिक ताचा मठ से होते हुए यह सफर यादगार बनता चला जाता है। यहां ट्रैकिंग करते हुए आपको हिमालयन ब्लू शीप, हिमालयन ग्रिफ्फोन, स्नो लेपर्ड और पक्षियों की विभिन्न प्रजातियों का दीदार करने का अवसर भी मिलता है। *

हिडन डायमंड दरमा घाटी ट्रैक, उत्तराखंड

उत्तराखंड के कुमाऊं क्षेत्र में स्थित दरमा घाटी ट्रैक (14,000 फीट की ऊंचाई पर स्थित) एक छुपा हुआ हीरा कहा जाता है, जो आपको आकर्षक गांवों, घने जंगलों, रोलिंग घास के मैदानों और ग्लेशियर से पोषित धाराओं से रूबरू कराता है। इन सबकी पृष्ठभूमि में होती हैं हिमालय की विशाल ऊंची चोटियां। जब मानसूनी बारिश इस लैंडस्केप को भिगो देती है, तो यह वादी हरियाली और जंगली फूलों की सुगंध से भर जाती है। रास्ते में आपको बर्फ से ढंके पहाड़ मिलेंगे। आप इस दौरान स्थानीय समुदायों की विशिष्ट संस्कृति और मेजबानी का भी आनंद ले सकते हैं। जून से सितंबर इस ट्रैक पर जाने के लिए सबसे अच्छा समय है। *

हसीन वादियों से समृद्ध पिन घाटी, हिमाचल प्रदेश

मानसून में ट्रैकिंग के लिए एक अन्य बेहतरीन ट्रैकिंग स्पॉट पिन घाटी (15,780 फीट की ऊंचाई पर स्थित) है। यहां हरे-भरे जंगलों, विशाल घास के मैदानों, पथरीले रास्तों, बर्फ से ढंके मैदानों और ठंडे रेगिस्तानों का फोटो-फ्रेंडली नजारा देखने को मिलता है। यह ट्रैकिंग मुध नामक गांव से आरंभ होती है। पूरी तरह बर्फ सं ढंकी झोपड़ियों की पृष्ठभूमि में मटर और जौ के खेत और तेज हवाओं के साथ झूमते पेड़-पौधे आपका मन मोह लेंगे। इस ट्रैकिंग के दौरान आप प्राकृतिक गर्म पानी के चश्मों के लिए विख्यात खीरगंगा पर रुक सकते हैं। पिन नेशनल पार्क के साथ गेचांग, का और थंगो जैसे स्थान देखना न भूलें। यहां जाने के लिए सबसे अच्छा समय जुलाई से मध्य सितंबर तक माना जाता है। *

वन्य-जीवन से दीदार कराता तोसामैदान ट्रैक, कश्मीर

इस मौसम में ट्रैकिंग की सोच रहे हैं तो तोसामैदान ट्रैक (12,460 फीट की ऊंचाई पर स्थित) आपकी बकट लिस्ट में अवश्य होना चाहिए। कश्मीर के गुलमर्ग में स्थित यह ट्रैक विशाल पीर पंजाल रेंज, अल्पाइन घास के मैदान, शंकुधारी और चीड़ के जंगलों, चमचमाती झीलों और बर्फ से ढंके पहाड़ों से होकर गुजरता है। इस मार्ग पर ट्रैकिंग के दौरान विभिन्न हिमालयी वन्य जीवों जैसे कस्तूरी हिरण, लेपर्ड और विभिन्न प्रजातियों की मुर्गियां आदि को देखने का मौका आपको मिलेगा। यहां ट्रैकिंग करने का सबसे अच्छा समय जुलाई से सितंबर तक का होता है। *

सेल्फ इंप्रूवमेंट / नरेंद्र कुमार

किसी भी प्रोफेशन में ग्रो करने के लिए लगातार सीखना और खुद को बेहतर बनाने की क्षमता का होना जरूरी है। ऐसा तभी हो सकता है, जब आपको अपनी कमियां पता हों। कमियां पता लगाने के लिए बॉस ही नहीं कुलीग्स, सीनियर्स का फीडबैक भी बहुत महत्वपूर्ण होता है। इस बारे में आपको जरूर जानना चाहिए।

करियर ग्रोथ के लिए इंपॉर्टेंट है फीडबैक

आज के दौर में प्रोफेशनल दुनिया में कामयाबी के लिए सिर्फ मेहनत करना ही काफी नहीं है। कंपनियां अब अपने स्टाफ में ऐसे लोगों को चाहती हैं, जो हर समय सीखने को तैयार रहें। जो अपनी कमियों को पहचान सकें और किसी के द्वारा बताए जाने पर उसमें जरूरी सुधार करें। यही कारण है कि फीडबैक आज करियर ग्रोथ का एक महत्वपूर्ण जरिया बन चुका है। वास्तव में फीडबैक एक ऐसा आईना है, जिसमें हम अपनी प्रोफेशनल इमेज बहुत अच्छी तरह से देख सकते हैं। जो लोग इस आईने से डरते नहीं, वे लोग सचमुच इससे बहुत कुछ सीखते हैं।

क्या है फीडबैकः फीडबैक का मतलब केवल आपकी गलती बताया जाना नहीं होता। यह आपके प्रोफेशनल बिहेवियर, काम की प्रस्तुति और क्षमता का किया गया मूल्यांकन होता है, जिसमें सुझाव भी शामिल होता है। इसे अगर आप सकारात्मक तरीके से लेते हैं तो यह आपको बेहतर बनाने में मदद करता है और अगर आप इसे अपनी व्यक्तिगत अलोचना के तौर पर लेते हैं, तो इससे आपको नुकसान हो सकता है।

जरूरी है फीडबैकः डेढ़-दो दशक पहले नौकरियां आज के मुकाबले अपेक्षाकृत स्थिर हुआ करती थीं। लोग बीस-बीस, तीस-तीस साल तक एक ही कंपनी में गुजार देते थे। आज के समय में कंपनियां जरूरी नहीं है कि अगर किसी को अपने यहां रख लें तो उसे सालों-साल ढोती ही रहें। हां, आज भी दस पर्सेंट ऐसे कर्मचारी होते हैं, जो कई साल एक ही कंपनी में गुजार देते हैं। सवाल है, ऐसे थोड़े लोगों में क्या खूबी होती है कि आज भी कंपनियां इन थोड़े से लोगों को अपने साथ लंबे समय तक बनाए रखना चाहती हैं? दरअसल, आज कंपनियां उन्हीं कर्मचारियों को लंबे समय तक अपने साथ बनाए रखने में तरजीह देती हैं, जो अपनी प्रोफेशनल स्किल को लगातार बेहतर बनाने की कोशिश में रहते हैं और जब भी उन्हें कुछ सीखने का मौका मिलता है, जल्द से जल्द सीखने की कोशिश करते हैं। जो अपनी गलतियों में सुधार करने के लिए तैयार रहते हैं, समय और परिस्थितियों के मुताबिक काम के तौर-तरीके में जरूरी बदलाव करते हैं और टीम के साथ बेहतर तालमेल बनाए रखते हैं। वास्तव में ये क्वालिटीज फीडबैक के बेहतर उपयोग के नतीजे के रूप में सामने आती हैं।

फीडबैक बदलता है दिशाः कई बार लोगों को खुद अपनी कमजोरियों का अंदाजा नहीं हो पाता। ऐसे में अगर आप स्वयं को मिले फीडबैक के बाद अपने काम की गुणवत्ता के बारे में जरूरी समझकर, अपनी कमी को सुधारने की कोशिश करते हैं, तो यह कोशिश आपके लिए न केवल प्रमोशन बल्कि आगे चलकर टीम लीड करने की राह भी खोलेगी। यहां सीनियर्स को फीडबैक देने के तरीके के बारे में भी समझना जरूरी है। अकसर सीनियर्स गलत तरीके से या गुस्से में फीडबैक देते हैं। मसलन, किसी के काम में उन्हें कोई कमी नजर आती है, तो वह छूटते ही कह देते हैं, 'तुम हमेशा ही गलत काम करते हो।' इससे आपका कुलीग असहज हो जाता है। होना यह चाहिए कि किसी कुलीग या जूनियर को फीडबैक दें तो उसमें केवल कमी निकालने की बजाय उसके काम को और बेहतर बनाने के सुझाव पर फोकस होना चाहिए।

फीडबैक लेने का सही तरीकाः फीडबैक देने के सही तरीके की तरह ही इसे लेने का तरीका भी सही होना चाहिए। सही तरीका यह है कि हम अपने काम में खामी निकालने वाले व्यक्ति की बात को ध्यान से सुनें, उसे बीच में कतई न टोकें। आप अपने लिए दिए गए महत्वपूर्ण सुझाव को लिख लें, ताकि बाद में जब अकेले में हों, तो उसे और बेहतर तरीके से समझ सकें। कोई भी फीडबैक मिलने पर आप सवाल पूछ सकते हैं, लेकिन यह सवाल रिएक्शन या ऑब्जेक्शन न लगे बल्कि आपको दी जा रही सलाह को और स्पष्ट किए जाने के संबंध में होना चाहिए या फिर बेहतर करने की इच्छा से संबंधित होना चाहिए। *

पुराने दौर से लेकर आज के समय में भी दुनिया भर के देशों में जन्मदिन के उत्सव को अलग-अलग तरीके से मनाया जाता रहा है। कुछ जगहों की परंपराएं तो बहुत ही अजब-अनोखी हैं। इनमें से कुछ दिलचस्प परंपराओं के बारे में यहां बता रहे हैं।

बर्थ-डे सेलिब्रेशन के अजब-अनोखे तरीके

बच्चों का 'किंडरफेस्ट' सेलिब्रेशन, जर्मनी

जन्मदिन पर 'पिन्याटा' फोड़ने की प्रथा, मैक्सिको

रोचक / नेहा जैन

बर्थ-डे का नाम सुनते ही सबसे पहले आपकी कल्पना में चारों तरफ सजे हुए रंग-बिरंगे गुब्बारे और मेज पर रखा सजा हुआ केक आता होगा। केक काटना आज जन्मदिन के उत्सव का एक अनिवार्य हिस्सा बन गया है। लेकिन केक के आविष्कार के पूर्व या उसके बाद भी दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में लोग किस तरह बर्थ-डे सेलिब्रेट करते थे, यह जानना बहुत दिलचस्प है।

प्राचीन यूनान (ग्रीस): प्राचीन काल में यूनान देश के लोग जन्मदिन के अवसर पर चंद्रमा की देवी आर्टेमिस के सम्मान में गोल आकार का शहद वाला केक बनाते थे, जो चांद का प्रतीक माना जाता था। केक पर जलती मोमबत्तियां चांद की चांदनी की तरह चमकती थीं। उनका मानना था कि मोमबत्तियों का धुआं उनकी प्रार्थनाओं को देवताओं तक पहुंचाता है।

रोमन सभ्यता: प्राचीन रोम में भी जन्मदिन के अवसर पर आटे, मेवों और शहद से बने केक या मीठी ब्रेड खिलाने का चलन था।

प्राचीन मिस्र (इजिप्ट): प्राचीन मिस्र के फराओ (राजाओं) के राज्याभिषेक के दिन को उनका 'जन्मदिन' माना जाता था, जिसे भव्य उत्सव के रूप में मनाते थे। इस अवसर पर विशेष तरह के कई पकवान बनाए जाते थे।

जर्मनी का किंडरफेस्ट: 18वीं शताब्दी में जर्मनी में बच्चों के जन्मदिन पर विशेष उत्सव मनाया जाता था, जिसे 'किंडरफेस्ट' कहा जाता था। यहां बच्चे की उम्र के अनुसार केक पर मोमबत्तियां लगाई जाती थीं और एक अतिरिक्त मोमबत्ती गुड लक के लिए रखी जाती थी।

ऐसे भी करते हैं बर्थ-डे सेलिब्रेटः आज भी दुनिया के अलग-अलग देशों में जन्मदिन को अनूठे तरीकों से मनाते हैं। इनमें से कुछ के बारे में यहां बता रहे हैं।

चीनः चीन में बच्चे के बर्थ-डे पर केक की जगह लंबी उम्र के प्रतीक के रूप में 'लॉन्जिविटी नूडल्स' खाए जाते हैं। मान्यता है कि नूडल्स जितने लंबे होंगे, उम्र उतनी ही लंबी होगी। हालांकि अब वहां केक के साथ भी बर्थ-डे सेलिब्रेशन लोकप्रिय है।

ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंडः इन दोनों देशों में बर्थ-डे के अवसर पर फलों और क्रीम से सजी 'पावलोवा' केक बनाया और खाया जाता है।

जापानः यहां 3, 5 और 7 साल का होने पर बच्चों का जन्मदिन विशेष उत्सव के रूप में मनाते हैं, जहां वे पारंपरिक किमोनो पहनकर मंदिर जाते हैं। यह परंपरा शिकी-गो-सान कहलाती है।

मैक्सिकोः यहां जन्मदिन की पार्टियों में 'पिन्याटा' फोड़ने का रिवाज है। यह कागज से बना बड़ा-सा खिलौना या गुब्बारा होता है। इसे कैंडी और छोटे-छोटे खिलौनों से भरा जाता है, फिर ऊंचाई पर लटका दिया जाता है। फोड़ने पर इससे निकलने वाले उपहारों को बच्चे बड़े उत्साह से लूटते हैं।

दक्षिण कोरियाः यहां जन्मदिन की सुबह 'मियेओक-गुक' (सीवीड सूप) पीना अनिवार्य माना जाता है। यह मां के प्रति सम्मान जताने का तरीका है, क्योंकि प्रसव के बाद मांएं इसे खाती हैं।

डेनमार्कः डेनमार्क में यदि किसी के घर के बाहर राष्ट्रीय ध्वज लहरा रहा हो तो इसका मतलब है कि घर में किसी का जन्मदिन है।

कनाडाः कनाडा में कुछ जगहों पर बर्थ-डे पर उस व्यक्ति की 'नोज ग्रीसिंग' की परंपरा है। माना जाता है कि नाक पर मक्खन लगाने से आने वाले साल में उसकी मुसीबतें फिसल कर दूर चली जाएंगी। कनाडा और अमेरिका में लड़कियों के 16वें जन्मदिन को बड़े उत्सव के रूप में मनाया जाता है। इसे स्वीट सिक्सटीन फेस्टिवल के रूप में मनाते हैं।

लैटिन अमेरिकाः लैटिन अमेरिकी देशों में लड़कियों के 15वें जन्मदिन को विशेष धूमधाम से मनाया जाता है, जो उनके बचपन से वयस्कता की ओर बढ़ने का प्रतीक होता है। *

भारत में बर्थ-डे सेलिब्रेशन

अपने देश भारत में जन्मदिन पर मंदिर जाने, अपने से बड़ों का आशीर्वाद लेने और नए कपड़े पहनने आदि का रिवाज है। हालांकि महानगरों में आजकल बर्थ-डे पर केक काटना पॉपुलर हो गया है। लेकिन भारत में पारंपरिक रूप से इस अवसर पर खीर, मिठाई या हलवा खिलाया जाता है।

अनूठे बर्थ-डे केक्स

बर्थ-डे केक से जुड़ी कुछ बातें बहुत ही इंट्रेस्टिंग हैं। **भारत का सबसे भारी बर्थ-डे केकः** भारत का सबसे भारी और लंबा बर्थडे केक 5.7 टन का था। यह विशाल केक जनवरी 2020 में भारतीय अभिनेता 'रॉकिंग स्टार यश' के जन्मदिन के अवसर पर बेंगलुरू, कर्नाटक में बनाया गया था। इसे बनाने में 22,500 अंडे, 1,800 किलोग्राम मैदा और 1,150 किलोग्राम चीनी का इस्तेमाल किया गया था। इस केक को 'श्री राम भवन स्वीट्स एंड बेकरी' के 20 कारीगरों ने 96 घंटों में तैयार किया था।

दुनिया का सबसे महंगा केकः दुनिया का सबसे महंगा केक ब्रिटिश डिजाइनर डेबी विंघम द्वारा वर्ष 2015 में बनाया गया था, जिसकी कीमत लगभग 75 मिलियन डॉलर (करीब 625 करोड़ रुपए) थी। यह केक एक फैशन रनवे की थीम पर आधारित था, जिसमें 4,000 से अधिक असली हीरे और कीमती रत्न जड़े गए थे।

दुनिया का सबसे बड़ा बर्थ-डे केकः यह रिकॉर्ड सन् 1990 में अमेरिका के अलबामा राज्य के फोर्ट पायने शहर के 100वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में बने केक के नाम है।

सिने-ट्रेंड / गौरव द्विवेदी

हिंदी सिनेमा का स्वर्णिम दौर केवल महान अभिनेताओं का दौर नहीं था, बल्कि महान लेखकों का भी दौर था। 1950, 60 और 70 के दशक में बॉलीवुड की सबसे बड़ी ताकत उसके लेखक हुआ करते थे। उस दौरान फिल्मों की नींव प्रायः साहित्य पर रखी जाती थी और पटकथा लेखक फिल्म निर्माण की प्रक्रिया के केंद्र में हुआ करते थे। यही कारण है कि उस दौर की अनेक फिल्में आज भी प्रासंगिक लगती हैं, जबकि तकनीकी रूप से कहीं अधिक उन्नत आज की कई फिल्में कुछ वर्षों में ही भुला दी जाती हैं।

साहित्य-सिनेमा चलते थे साथ-साथः हिंदी फिल्मों के उस स्वर्ण युग के पीछे प्रोग्रेसिव राइटर्स एसोसिएशन और भारतीय साहित्यिक परंपरा का गहरा प्रभाव था। उर्दू और हिंदी साहित्य से जुड़े अनेक लेखक फिल्म उद्योग में आए। इनमें साहिर लुधियानवी, कैफी आजमी, ख्वाजा अहमद अब्बास, राजेंद्र सिंह बेदी, इस्मत चुगताई, कृशन चंदर, अली सरदार जाफरी, राही मासूम रजा, गुलशन नंदा, कमलेश्वर, मनोहर श्याम जोशी और शैलेंद्र के नाम प्रमुख थे। इन लेखकों ने फिल्मों को केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं रहने दिया, बल्कि समाज, राजनीति और मानवीय संवेदनाओं का सशक्त दस्तावेज बना दिया।

साहित्य का विस्तार होती थीं फिल्मी पटकथाः उस दौर में पटकथा लेखन सिर्फ घटनाओं का क्रम नहीं था, बल्कि साहित्य का स्वाभाविक विस्तार हुआ करता था। ख्वाजा अहमद अब्बास ने 'आवारा', 'श्री 420', 'जागते रहो' और 'बॉबी' जैसी फिल्मों में सामाजिक यथार्थ को स्वर दिया। राजेंद्र सिंह बेदी ने 'देवदास', 'मधुमती' और 'अनुपमा' जैसी फिल्मों की पटकथाओं में साहित्यिक गहराई जोड़ी। राही मासूम रजा ने 'मैं तुलसी तेरे आंगन की', 'गोलमाल' और बाद में 'महाभारत' (सीरियल) से अपनी पहचान बनाई।

साहित्य से निकली कालजयी फिल्मेंः यह वह दौर था, जब फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी पर 'तीसरी कसम' बनी, आर. के. नारायण के उपन्यास पर 'गाइड' बनी, बिमल मित्र के उपन्यास पर 'साहिब बीवी और गुलाम' बनी।

लेखकों की मेज से उपजा हिंदी सिनेमा का स्वर्णयुग

हिंदी सिनेमा का स्वर्णिम दौर केवल सितारों का नहीं, बल्कि लेखकों का भी स्वर्णिम समय था। साहित्य से निकली कहानियों और सशक्त पटकथाओं ने उस दौर की फिल्मों को कालजयी बनाया। आज जब बॉलीवुड सशक्त कहानी की कमी से जूझ रहा है, ऐसे में उसे फिर से साहित्य की ओर लौटने की दरकार है।

मन्नू भंडारी, अमृता प्रीतम, धर्मवीर भारती और प्रेमचंद जैसे साहित्यकारों की रचनाएं भी फिल्मकारों को प्रेरित करती थीं। सत्यजीत रे, ऋत्विक घटक और मृणाल सेन जैसे फिल्मकारों का प्रभाव भी हिंदी सिनेमा के गंभीर रचनाकारों पर दिखाई देता था।

पटकथा लेखन के स्टार सलीम-जावेदः 1970 के दशक में पटकथा लेखन को नई ऊंचाई सलीम-जावेद की जोड़ी ने दी। 'जंजीर', 'दीवार', 'शोले', 'त्रिशूल', 'डॉन' और 'शक्ति' जैसी फिल्मों ने साबित किया कि मजबूत कहानी और दमदार संवाद किसी भी फिल्म की सबसे बड़ी पूंजी होते हैं। यह संयोग नहीं है कि इन फिल्मों के संवाद आज भी लोगों की यादों में बसे हुए हैं।

बदलने लगीं प्राथमिकताएंः 1980 के दशक में हिंदी सिनेमा की दिशा बदलने लगी। वीडियो कैसेट संस्कृति, टेलीविजन का विस्तार और तेजी से बढ़ते व्यावसायिक दबावों के बीच कहानी की जगह फॉर्मूले ने लेनी शुरू कर दी। 'डिस्को डांसर' और 'हिम्मतवाला' जैसी फिल्मों की व्यावसायिक सफलता ने निर्माताओं को यह विश्वास दिलाया कि संगीत, सितारे और मनोरंजक मसाले, सशक्त कहानी की कमी पूरी कर सकते हैं।

नहीं है कहानियों की कोई कमीः वास्तव में बॉलीवुड की समस्या प्रतिभा की कमी नहीं, बल्कि साहित्य और समाज से दूरी है। हिंदी पट्टी में प्रेमचंद, रेणु, श्रीलाल शुक्ल, अमरकांत, काशीनाथ सिंह, उदय प्रकाश, चित्रा मुद्गल, गीतांजलि श्री, संजीव और नीलोत्पल मृणाल जैसे लेखकों का विशाल संसार मौजूद है। लोककथाओं, इतिहास, ग्रामीण भारत, छोटे शहरों, सामाजिक बदलावों और समकालीन भारत के असंख्य अनुभवों से भरी कहानियां आज भी लिखी जा रही हैं। जरूरत केवल उन्हें पर्दे पर लाने की इच्छा की है।

फिर से देना होगा कहानियों को महत्वः यदि बॉलीवुड को अपनी खोई हुई रचनात्मक ऊर्जा वापस हासिल करनी है तो उसे फिर से लेखकों की महत्ता को स्वीकारना होगा। आखिरकार 'मदर इंडिया', 'दो बीघा जमीन', 'गाइड', 'आनंद' जैसी फिल्मों को कैमरों ने नहीं, कहानियों ने अमर बनाया था। सिनेमा का भविष्य भी वहीं से निकलेगा जहां उसका स्वर्णिम अतीत जन्मा था यानी लेखकों की मेज से। *

(लेखक फिल्म नीति के जानकार हैं)

दक्षिण भारतीय फिल्मों में बरकरार कहानी का महत्व

दक्षिण भारतीय फिल्म उद्योगों ने कहानी की परंपरा को बनाए रखा। मलयालम सिनेमा में एम. टी. वासुदेवन नायर, पद्मराजन, लोहितदास और हाल के वर्षों में दिलीश पोथन तथा श्याम पुष्करण जैसे लेखकों-निर्देशकों ने साहित्य और समाज से जुड़ी कहानियों को जीवित रखा। तमिल सिनेमा में जयकांतन, सुजाता और बाद में वेट्रिमारन जैसे फिल्मकारों ने यथार्थवादी कथाओं की परंपरा को आगे बढ़ाया। इसी का परिणाम है कि 'दृश्यम', 'प्रेमम', 'कुंबलंगी नाइट्स', 'महाराजा', 'असुरन', 'जय भीम', '96', 'कांतारा', 'चार्ली 777' और 'पुष्पा' जैसी फिल्में अपनी स्थानीय संस्कृति में रची-बसी होने के बावजूद राष्ट्रीय और वैश्विक दर्शकों तक पहुंचती हैं। ये फिल्में दर्शाती हैं कि स्थानीयता ही वैश्विकता का रास्ता बन सकती है